# सदीनामा

सोच में इज़ाफे की पत्रिका www.sadinama.in ISSN : 2454-2121

वर्ष-18 ❐ अंक-4 ❐ 1 से 28 फरवरी, 2018 ❐ पृष्ठ-28 ❐ R.N.I. No. WBHIN/2000/1974 ❐ मूल्य-5.00 रुपए


# भीमा कोरेगांव : ऐतिहासिक नायकोंकी तलाश में दलित

महाराष्ट्र के कोरेगाँव में एक जनवरी 2018 को उन दलित सिपाहियों, जो सन् 1818 में पेशवा के खिलाफ युद्ध में अंग्रेजों की ओर से लड़ते हुए मारे गए थे, को श्रद्धांजलि देने के लिए इकट्ठा हुए दलितों के खिलाफ अभूतपूर्व हिंसा हुई। सन् 1927 में अम्बेडकर ने कोरेगांव जाकर इन शहीदों को अपनी श्रद्धांजलि दी थी। दलितों द्वारा हर साल भीमा कोरेगांव में इकट्ठा होकर मृत सैनिकों को श्रद्धांजलि देना, दलित पहचान को बुलंद करने के प्रतीक के रूप में देखा जाने लगा है। इस साल यह समारोह बड़े पैमाने पर आयोजित किया गया क्योंकि इस युद्ध के 200 साल पूरे हो रहे थे। विवाद एक दलित गोविंद गायकवाड़ - जिसके बारे में यह कहा जाता है कि उसने संभाजी का अंतिम संस्कार किया था की समाधि को अपवित्र किए जाने से शुरू हुआ। भगवा झंडाधारियों ने उन दलितों पर पत्थर फेंके जो भीमा कोरेगाँव में इकट्ठा हुए थे। शिवाजी प्रतिष्ठान और समस्त हिन्दू अगादी नामक हिन्दुत्व संघटन इस हिंसा के अगुआ थे।

> आज हम अतीत को साम्प्रदायिकता के चश्में से देख रहे हैं और इस बात को स्वीकार करने के लिए तैयार नहीं हैं कि युद्धों का उद्देश्य केवल और केवल संपत्ति और सत्ता हासिल करना था।

पूणे के शनिवारवाड़ा, जो पेशवाओं के राज का केन्द्र था, में एक सभा को संबोधित करते हुए दलित नेता जिग्नेश मेवानी ने 'आधुनिक पेशवाई' के खिलाफ संघर्ष शुरू करने का आह्वान किया। 'आधुनिक पेशवाई' से उनका आशय भाजपा-आरएसएस की राजनीति से था। जिस सभा में उन्होंने भाषण दिया, वहाँ दलितों के साथ-साथ अन्य समुदायों के नेता भी उपस्थि थे। इस घटना पर विभिन्न प्रतिक्रियाएं हुईं। कुछ लोग इसे मराठा विरुद्ध दलित संघर्ष बता रहे हैं तो कुछ का कहना है कि यह दलितों पर हिन्दुत्ववादी ताकतों का हमला है। एक ट्वीट में राहुल गांधी ने इस घटना के लिए भाजपा की फासीवादी व दलित विरोधी मानसिकता को दोषी ठहराया।

भीमा कोरेगांव युद्ध का इतिहास, समाज में व्याप्त कई मिथकों को तोड़ता है। इस युद्ध में एक ओर थे अंग्रेज, जो अपने साम्राज्य का विस्तार करना चाहते थे, तो दूसरी ओर थे पेशवा, जो अपने राज को बचाना चाहते थे। अंग्रेजों ने अपनी सेना में बड़ी संख्या में दलितों को भर्ती किया था। इनमें महाराष्ट्र के महार, तमिलनाडु के पार्या और बंगाल के नामशूद्र शामिल थे। अंग्रेजों ने उन्हें अपनी सेना में इसलिे शामिल किया था क्योंकि वे अपने नियोक्ताओं के प्रति वफादार रहते ते और आसानी से उपलब्ध थे। पेशवा की सेना में अरब के भाड़े के सैनिक थे। इससे यह साफ है कि मध्यकालीन इतिहास को हिन्दू बनाम मुस्लिम संघर्ष के रूप में प्रस्तुत किया जाना कितना गलत है। जहाँ इब्राहिम खान गर्दी, शिवाजी की सेना में शामिल थे वहीं बाजीराव पेशवा की सेना में अरब सैनिक थे। दुर्भाग्यवश आज हम अतीत को साम्प्रदायिकता के चश्में से देख रहे हैं और इस बात को स्वीकार करने के लिए तैयार नहीं हैं कि युद्धों का उद्देश्य केवल और केवल संपत्ति और सत्ता हासिल करना था।

बाद में अंग्रेजों ने दलितों और महारों को अपनी सेना में भर्ती करना बन्द कर दिया क्योंकि उन्होंने पाया कि ऊँची जातियों के

**शेष पृष्ठ 27 पर**

# ये टार हमें बना सकता बीमार और बीमार

कैंसर जैसे रोग के जागरूकता के लिए यह विज्ञापन "ये टार हमे बना सकता है, बीमार और बीमार" हमें अक्सर याद आता है, पर यही विज्ञापन जब हमें उल्टा बीमार बनाने लगते हैं तो खतरा बढ़ जाता है। वैसे भी सुगर हर तीसरे भारतवासी के दिमाग में जगह ले चुकी है। भयादोहन की स्थिति है कि गाँव देहात तक इस बीमारी से सभी परिचित हैं। आज हम बीमार होते ही प्राइवेट हास्पिटल की तरफ भागते हैं, यह जानते हुए कि सरकारी, जिसे लोग खैराती भी कहते हैं के पास जो मशीन हैं उनके दाम में पूरा प्राइवेट हास्पिटल बिक जाएगा, पूरी साफ-सफाई मार्केटिंग के बल और बांग्लादेश, म्यांमार के मरीजों की वजह से इनका बाजार रमरमा है। कोलकाता के एक प्राइवेट हास्पिटल ने तो किडनी बेचने का पूरा तंत्र ही विकसित कर लिया है और अब तक नि:संतान दम्पतियों के लिए प्राइवेट अस्पतालों की जो मार्केटिंग हो रही है इससे सरोगैसी का अवैध सेंटर बनने के आसार बन रहे हैं। हर सरकारी अस्पताल के दो किमी० घेरे में प्राइवेट अस्पतालों और नर्सिंग होम्स का जाल है। पैसा रहे तो इनमें इलाज करायें केस बिगड़े तो सरकारी अस्पताल। हम बीमार होने पर पैसा नहीं जान देखते हैं। यह भी सच है कि कभी दातव्य स्कूलों और अस्पतालों को बनवाने वाले सेठों की अगली पीढ़ी अब मल्टीस्पेशिलिटी हास्पिटल बना रही है, कमा रही है। अब हमको बीमार बताने के लिए पूरी विज्ञापन व्यवस्था लगी है। हमने पूरे देश में सेनिटरी नैपकिन का प्रयोग मात्र 37.7% सीखा है। यूपी, बिहार में भाई लोग रक्तदान से दूर रहना चाहते हैं, ऐसे हालातों में हम पर खतरा चौतरफा है।

एक हमें बीमार समझाने की श्रृंखला, बेलगाम स्वास्थ सुविधों, गैरजरूरी चिकित्सीय जांचों की जरूरत न होने पर भी करना, महंगी दवाओं का प्रयोग और पूरी तरह है सरकारी अस्पतालों को बीमार साबित कर देना। कारपोरेट पद्धति से स्वास्थ्य केन्द्रों की व्यवस्था महंगा इलाज और नीति नियंताओं की असंवेदनशीलता।

जितेन्द्र जितांशु

**हमारी बेबसाइट**

# www.sadinama.in

**इस अंक को इंटरनेट पर पढ़ें**


## संपादक मण्डल

| | | |
|---|---|---|
| उप-संपादक | : | **तितिक्षा तथा पापिया भट्टाचार्य** |
| संपादकीय सलाहकार: | | **यदुनाथ सेउटा** |
| संपादक | : | **जितेन्द्र जितांशु** |
| विशेष सहयोग | : | **आरती चक्रवर्ती, एच० विश्वाणी तथा राजेन्द्र कुमार रुईया (अमेरिका) सभी अवैतनिक हैं।** |

**प्रकाशन प्रभार**

**राजेश्वर राय • मीनाक्षी सांगानेरिया**
**मारिया शमीम**



## पत्राचार का पता :

सम्पादक - सदीनामा
48/49A, Swiss Park, Kolkata-700 033
West Bengal. India ☎ : 9231845289
E-mail : jjitanshu@yahoo.com

## दूधनाथ सिंह की एक कविता

मरने के बाद भी
याद करूंगा
तुम्हें

तो लो, अभी मरता हूँ
झरता हूँ
जीवन
की
डाल से

निरन्तर
हवा में
तरता हूँ
स्मृति विहीन करता हूँ
अपने को
तुमसे
हरता हूँ।

## अरुण चन्द्र रॉय की कविता

**हुंकार**

बाँध दिए गए हैं
उसके दोनों पैर
और कहा जा रहा है उसे
दौड़ो, तेज़ दौड़ो
छू लो मंजिल

उसके दोनों हाथों को
पीठ की तरफ मोड़ कर
बाँध दिया गया है
और कहा जा रहा है
लिखो क्रांति,
बदल दो देश की तस्वीर

उसकी आँखों पर
चढ़ा दिया गया है
नीला पीला चश्मा
और कहा जा रहा है कि
फर्क करो रंगों में
फर्क करो सच झूठ में
वह हुंकार भर रहा है।

# तिरंगा अगम काव्य संगम की मासिक काव्य गोष्ठी सम्पन्न

21 जनवरी 2018 को तिरंगा अगम काव्य संगम (स्व० अगम शर्माजी) की मासिक काव्य गोष्ठी काशीपुर स्थित आदर्श युवक संघ (आयुस) के संयुक्त तत्वावधान में "आयुस भवन" सभागार में श्री जगमोहन सिंह 'खोखर' की अध्यक्षता में हुई। इस अवसर पर जनाब आलम गोरखपुरी और श्री जगेश तिवारी मुख्य अतिथि थे। गोष्ठी का संचालन सदीनामा पत्रिका के सम्पादक श्री जितेन्द्र जितांशु ने किया। काव्य पाठ करने वाले कवि एवं शायर श्री जीवन सिंह, योगेन्द्र शुक्ल 'सुमन', नन्दलाल रौशन, यदु नन्दन प्रसाद, शम्भू लाल जालान "निराला", विश्वजीत शर्मा 'सागर' विकास अत्रि, विनय नोक, हीरालाल साव, रणजीत भारती, दिनेश चन्द्र प्रसाद, सोहेल खान सोहेल, शमीम सागर, मौसम, विक्की यादव, युसूफ अख्तर, सईद आजर, रईस आजम हैदरी, मीनाक्षी सांगानेरिया, नसीम अकबर, चन्द्रिका प्रसाद पांडे 'अनुरागी', रिजवान गोरखपुरी, मज्तर इफ्तेखारी, रणविजय श्रीवास्तव, मो० चाँद, रामप्रकाश सिंह, नूर अशरफी, धन्यवाद ज्ञापन संयोजक शम्भूलाल जालान "निराला" ने दिया। रिपोर्ट लिखी मारिया शमीम ने।

# वाराणसी में विद्याश्री न्यास के तत्वावधान में दो दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी

**कोलकाता के साल्टलेक के उपनगर में सिटी सेंटर के पास लघुपत्रिकाओं का एक मेला लगा था, उसमें सदीनामा का स्टाल भी था। साल्टलेक में ही रहते हैं डॉ० अमरनाथ, फोन किया तो बोले ट्रेन में हैं। वाराणसी जा रहा हूँ, फोन कट गया। इस कार्यक्रम में ही भाग लेने गये थे। निबंधकार अजयेन्द्र नाथ त्रिवेदी वहीं से यह रपट —सम्पादक**

डॉ० विद्यानिवास मिश्र के जन्मदिन मकर संक्रांति के अवसर पर दिनांक 13-14 जनवरी, 2018 को उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान लखनऊ, साहित्य अकादमी एवं विद्याश्री न्यास की ओर से वाराणसी में दो दिवसीय अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी हिन्दी आयोजित की गई। दुर्गाकुंड स्थित धर्मसंघ शिक्षा मंडल परिसर में आयोजित इस संगोष्ठी का विषय था भाषा की परम्परा प्रयोग और संभावनाएं। उद्घाटन सत्र में वरिष्ठ पत्रकार अच्युतानंद मिश्र ने कहा कि हिंदी को पूरे देश की अस्मिता से जोड़ना होगा। हिन्दी ने स्वतंत्रता संग्राम में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई किन्तु बदलते परिवेश में खासतौर से पत्रकारिता ने इसे बाजारू भाषा बनाने में कोई कोर कसर नहीं छोड़ी है। हिन्दी को लेकर हमें हर तरह के संकोच को छोड़ना होगा। डॉ० दिलीप सिंह ने भावात्मक एवं सांस्कृतिक एकता में हिन्दी के योगदान और उपलब्धियों की व्याख्या की। तातियाना ने जर्मनी में हिन्दी शिक्षण-प्रशिक्षण की चर्चा करते हुए कहा कि विदेशों में हिन्दी के प्रति रूझान बढ़ रहा है। प्रो०सदानंद गुप्त ने हिन्दी के प्रति हिन्दी वालों की दृढ़ इच्छाशक्ति के अभाव पर क्षोभ व्यक्त किया।

डॉ० अरुणेश नीरन ने संगोष्ठी के प्रथम सत्र की विषय स्थापना की। इस सत्र के अन्य वक्ताओं, सर्वश्री अजयेन्द्रनाथ द्विवेदी, अखिलेश दूबे, करुणा पांडेय, रामप्रकाश कुशवाहा, प्रो० अवधेश प्रधान ने भी विचार रखे। अध्यक्षता प्रो० अनंत मिश्र ने की। संगोष्ठी के प्रथम सत्र में प्रो० दिलीप सिंह की पुस्तक उजड़ेदारों का बेबाक अफसाना तथा कहाँ-कहां से गुजर गया का लोकार्पण हुआ। पूर्व की संगोष्ठियों में पढ़े गए पर्चों के संकलन हिन्दी साहित्य में सांस्कृतिक संवेदना और मूल्यबोध पुस्तक का भी लोकार्पण किया गया। सिक्किम विश्वविद्यालय में हिन्दी विभाग की प्रतिभागी रिंकू छेत्री के मनोहारी लोक नृत्य हुआ. संगोष्ठी के समापन संत्र में हरिराम द्विवेदी की अध्यक्षता में काव्य संगोष्ठी का आयोजन किया गया। संचालन जितेन्द्र नाथ मिश्र ने किया।

# देशभक्ति और राष्ट्र निर्माण पर भाषण प्रतियोगिता आयोजित

कोलकाता: 3 जनवरी, 2018 आज महानगर में जादवपुर विश्वविद्यालय परिसर में 'एक भारत, श्रेष्ठ भारत' श्रृंखला के अन्तर्गत 'देशभक्ति और राष्ट्र निर्माण' विषय पर भाषण प्रतियोगिता आयोजित की गई। नेहरू युवा केन्द्र द्वारा आयोजित इस प्रतियोगिता में पश्चिम बंगाल और अण्डमान-निकोबार के विभिन्न स्थानों से आये 17 युवाओं ने भाग लिया।

क्षेत्रीय स्तर की इस प्रतियोगिता में आनन्द मोहन कॉलेज की बांग्ला विभागाध्यक्ष डॉ० अयन्तिका घोष, बासन्तीदेवी कॉलेज की प्रिन्सिपल श्रीमती इन्द्रीला गुहा और एन एस एस कार्यक्रम समन्वयक श्री अनुपम देव सरकार निर्णायक की भूमिका में थे। इस प्रतियोगिता में बाँकुड़ा की सुश्री अपराजिता राय ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। कोलकाता के श्री उजान नातिक द्वितीय और वर्दमान की सुश्री तृप्ती मुखर्जी तृतीय रहे। ये विजेता राष्ट्रीय प्रतियोगिता में बंगाल का प्रतिनिधित्व करेंगे। आयोजन में जादवपुर विश्वविद्यालय के प्रति उप कुलपति प्रो० आशीष स्वरूप वर्मा, संयुक्त रजिस्ट्रार संजय गोपाल सरकार और कोलकाता दूरदर्शन के उपनिदेशक (समाचार) श्री अब्दुल हमीद भी उपस्थित थे।


**सदीनामा के तत्वावधान में**

**Six Months Translation Course**

**4TH BATCH**

**श्याम बाजार मेट्रो के पास**

**बुधवार–** सायं 6 से 8.30

**शुक्रवार –** सायं 6 से 8.30

व्यवस्थापिका : **मीनल**

मो० : 8296808103

# दो हिन्दी सेवियों के ताजा बयान

**(एक)**

## प्रो० अमरनाथ : अधिकांश हिन्दी सेवियों की नजर बजट पर होती है।

प्रिय महोदय,

विश्व हिन्दी दिवस के अवसर पर मन की बात के अंतर्गत आप की विस्तृत प्रतिक्रिया दो बार पढ़ा। लगा कि यह तो मेरे मन की बात है।

दरअसल हिन्दी विधान के अनुसार भारत की राजभाषा है। इसके संवर्धन और प्रचार प्रसार के लिए बजट निर्धारित होता है। अधिकांश हिन्दी सेवियों की नजर उस बजट पर होती है। ऐसे लोगों को हिन्दी पर कोई खतरा नहीं दिखता।

पिछले कुछ वर्षों में बंगाल के शहरी क्षेत्र में लगभग सत्तर प्रतिशत हिन्दी और बांग्ला माध्यम के विद्यालय या तो अंग्रेजी माध्यम में बदल चुके हैं या बंद हो चुके हैं। पिछले तीन चार महीनों के थीर ही हिन्दी क्षेत्र की विभिन्न सरकारों द्वारा जो निर्णय लिए गए हैं वे चौकाने वाले हैं। अगले सत्र में दिल्ली नगर निगम के सभी सरकारी स्कूल अंग्रेजी माध्यम में बदल दिए जाएंगे। उत्तराखंड की सरकार ने अपने यहाँ के सरकारी स्कूलों को अंग्रेजी माध्यम में बदलने का निर्णय ले लिया है। उत्तर प्रदेश के शिक्षा विभाग के अधिकारी इस समय अपनी सरकार के उस आदेश को कार्यान्वित करने में जीन जान से लगे हैं जिसके अनुसार हर ब्लॉक के पांच चयनित सरकारी हिन्दी माध्यम वाले विद्यालयों को अंग्रेजी माध्यम में बदलना है।

मैं प्रधानमंत्रीजी के निर्वाचन क्षेत्र बनारस से भाषा केन्द्रित एक अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी में हिस्सा लेकर लौट रहा हूँ। विद्याश्री न्यास द्वारा, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, उत्तर प्रदेश भाषा संस्थान तथा साहित्य अकादमी के सहयोग से आयोजित इस दो दिवसीय संगोष्ठी में देश-विदेश के अनेक विद्वान शामिल हुए थे। अधिकांश विद्वानों को हिन्दी पर कोई संकट नजर नहीं आया।

फिर भी मैं निराश नहीं हूँ। गाँधी जी ने कहा था कि तुम जो कर रहे हो, संभव है कि उसका फल तुम्हें अपने जीवन में न देखने को मिले किन्तु यदि तुम कुछ करोगे नहीं तो कोई परिणाम नहीं निकलेगा। इसलिए मित्र! निराशा त्यागिए और समर के लिए मैदान में उतर जाइए। बहुत से साथी मिलेंगे आप को।

**(दो)**

## रविदत्त गौड़ : क्या हिन्दी मेरे पेट भरने के लिए कुछ योगदान करती है?

काफी पुरानी बात है। हिन्दी निबन्ध प्रतियोगिता में पुरस्कार मिला था तब मेरे बॉस जो केरल से थे उन्होंने बधाई देते हुए दो बातें कही थी।

1. हिन्दी बहुत ही सुन्दर भाषा है पर क्या यह मेरे पेट भरने के लिए (उन्होंने bread & butter कहा था) कुछ योगदान करती है?

2. क्यों मुझे हिन्दी हर जगह सुनने या बात करने के लिए नहीं मिलती जो अटल जी बोलते हैं?

बात 1985 के आसपास की है। उत्तर भी उनसे ही मिला। मैं तब सतर्कता विभाग में था और हमारे विभाग प्रमुख डेपुटेशन पर भारतीय पुलिस सेवा में महाराष्ट्र से थे पर रहने वाले तमिलनाडु के। वे बहुत अच्छी मराठी और हिन्दी बोलते और लिख लेते थे। सेवा नियमों के अनुसार उन्हें मराठी का ज्ञान जरूरी था और उसके लिए उन्होंने परीक्षा उत्तीर्ण भी की थी, जबकि मूलत: तमिल भाषी थे और शुरूआती दिनों में मराठी की देवनागरी लिपि और भाषा से पूर्णत: अनभिज्ञ। विभाग में मेरे अधीन दो पुलिस के उप निरीक्षक थे उनसे शुद्ध मराठी में बातें करते थे। ग्रामीण महाराष्ट्र में संवाद का साधन उनके पास केवल मराठी ही था और उनकी सेवा की भी आवश्यकता थी, क्योंकि विभागीय गतिविधियों में मराठी माध्यम ही एक विकल्प था, अत: वे किसी भी परिस्थिति में उसकी अवहेलना नहीं कर

सकते थे।

बॉस ने हिन्दी पढ़ी थी और केरल में एक बार अटल जी को सुन चुके ते। वह भाषा की सरलता और सहजता जो अटलजी के भाषण में उन्हें अनुभव हुई उसे कार्यालयीन हिन्दी में नज़र नहीं आई और उनको किसी तरह का उच्च स्तरीय प्रयास भी नहीं दिखा जो उन्हें हिन्दी में काम करने हेतु प्रेरित करता। अत: वे अपने आपको हिन्दी के साथ ईमानदारी से नहीं जोड़ पाए, जो उन्होंने कहा भी।

कई लोग यह कह सकते हैं कि इसमें नया क्या है क्योंकि बरसों से यह कहा जा रहा है कि हिन्दी या अन्य सभी भारतीय भाषाओं को रोजगार से जोड़ा जाय और वरिष्ठतम स्तर से इसे प्रोत्साहन मिले। मुझे मालूम है कि हिन्दी भाषी होकर जब मुझे महाराष्ट्र, बंगाल और आंध्रप्रदेश में काम करना पड़ा तो मराठी, बांग्ला, तेलुगू जानना मेरी व्यक्तिगत जरूरत बनी और यह मेरे संगठन ने मुझपर नहीं थोपी। यही हाल अहिंदी भाषी अधिकारीयों का होता है जब वे हिन्दी भाषी क्षेत्र में काम करते हैं। अत: मैं थोड़ा आगे बढ़कर यह कहना चाह रहा हूँ कि रोजगार से एक कदम आगे, हमें हमारी भाषाओं को व्यक्तिगत आवश्यकताओं के साथ जोड़ना है और लोगों को यह आधार लेकर प्रेरित करना है।

दूसरा मुद्दा जिस पर काफी बहस होती है वह है, तकनीकी, प्रबंधन और न्यायिक कार्य जिनका बहाना लेकर कई काम भारतीय भाषाओं में नहीं हो पा रहे। मुझे याद है कि मैं जब ल्यूब उत्पादन संभालता था तब सारे सूत्र अंग्रेजी में थे। यह क्षेत्र ऐसा है जिसमें सतत बदलाव व आधुनिकीकरण होता रहता है और गतिशील भी है। भारत में इस क्षेत्र में अनुसंधान कम हुआ है और सभी सूत्र अमेरिकी ज्यादा हैं पर सूत्रों का अनुवाद चीन, जापान कर पाते हैं क्योंकि वहाँ पर निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है। अत: वे अनुवाद पर एक मुश्त शुरुआत का व्यय कर चुके हैं और अब उस स्तर पर हैं कि उन्हें कुछ ज्यादा अनुसंधान और अनुवाद पर खर्च नहीं करना पड़ता। हम दुर्भाग्यवश दोनों ही जगह बहुत पीछे हैं। हम छिद्रान्वेषण और शवच्छेदन में तो माहिर हैं पर क्या हमने आत्ममंथन किया है कि अनुवाद के लिए कोई दीर्घ अवधि नीति बनाई जाय।

अनुवाद के बारे में मैंने बहुत बार कहा है कि अगर इस प्रक्रिया में आप जो कहा गया है उसके प्राण और आत्मा ही छीन लेंगे तो बचेगा क्या ? तकनीकी, कानूनी और प्रबंधन के क्षेत्र में तो और सजगता चाहिए। अनुवाद कला और विज्ञान दोनों है। यदि एक पर ध्यान नहीं देंगे तो दूसरा कमजोर रहेगा। अत: मेरे दो सुझाव हैं–

1. हर सरकारी कार्यालय और संगठन में एक प्रकोष्ठ केवल तकनीकी, कानूनी और प्रबंधन संबंधित अनुवाद के लिए बने। इसमें हिन्दी में उपाधि वाले अधिकारियों के साथ संबंधित क्षेत्र वाले अधिकारी भी हों। अनुवाद की भाषा ऐसी हो जो अगर अभियांत्रिकी की है तो, जिस तरह से एक अभियंता एक मज़दूर को समझाता है वैसी सरल हो। ऐसी पहल भी मान्य भारतीय भाषाओं के लिए भी होना चाहिए।

2. हर अखिल भारतीय सेवा से जुड़े अधिकारी को कम से कम दो-दो साल उनकी भाषा से इतर दो अन्य भाषाई क्षेत्रों में काम करना जरूरी हो। जैसे मराठी वाले तमिल व हिन्दी भाषी क्षेत्र में जाएँ।

राजनेता हल जानते हैं पर हर पहल को विफल करना भी। लेकिन आज इतने पढ़े लिखे योग्य युवा देश में हैं और अगर उक्त सुझावों के माध्यम से देश में रोजगार के अवसर और बढ़ते हैं तो कौन नेता ऐसे सुझावों के समर्थ में नहीं खड़ा होगा ?....यहाँ तक कि श्री शशि थरूर भी.... रविदत्त गौड़ ravikantagaur@gmail.com

## विशेष सूचना

**सदीनामा, कोलकाता से प्रकाशित होने वाली पत्रिका है। पत्रिका आने वाले महीनों में भारत में सिक्कों का शौक, व्यवसाय, इतिहास पक्षों पर लगातार लेख छापना चाहती है। आपसे एवं आपकी संस्था से आग्रह है कि सिक्कों से संबंधित विषयों पर हमें लेख भिजवाएँ। लेख किसी भी भाषा में हों सकता है हिन्दी में हों तो थोड़ी सुविधा होगी।**

**पत्रिका सिक्कों की प्रदर्शनी एवं इस शौक के प्रति लोगों के सुझाव के लिए आपके लिखित सुझावों का भी स्वागत करेगी।**

जितेन्द्र जितांशु
Mob. : 9231845289
E-mail : jjitanshu@yahoo.com

# पं० विद्यानिवास मिश्र के सरोकार

**अजयेन्द्रनाथ त्रिवेदी**
मुख्य प्रबंधक (राजभाषा)
यूको बैंक, प्रधान कार्यालय
10, बीटीएस सरणी, कोलकाता-1
सेल नं० : 09874459767

कहते हैं भारतेन्दु युग की साहित्य सर्जना का उत्कर्ष हिन्दी निबंधों में मिलता है। हिन्दी निबंधों में आज जो प्रौढ़ता है और इसमें जो शैलियाँ विन्यस्त हैं उनका बीजवपन भारतेन्दु युग में ही हुआ। एक से बढ़कर एक विदग्ध निबंधकारों के प्रातिभ अवदान और आधुनिक हिंदी निबंध साहित्य को अलंकृत तथा समृद्ध किया है। इन विगत 150 वर्षों में हिन्दी गद्य लगातार ही उत्कर्ष के सोपान चढ़ता गया है। हिन्दी के कृती निबंधकारों की नक्षत्रमाला में पंडित विद्यानिवास मिश्र की खास पहचान है। यह पहचान उनके सरोकारों से मुखर है और उनकी प्रतिबद्धता से भास्वर। अनगिनत निबंधों में पं० विद्यानिवास मिश्र के जो सरोकार अभिव्यक्त हैं उनको हम तीन वर्गों में रख सकते हैं। पहला है लोक के प्रति उनकी आस्था, दूसरा है परम्परा के प्रति उनका लगाव तथा तीसरा है हिन्दी की अप्रतिहत तेजस्विता में उनका अटूट विश्वास। पंडितजी की निबंध यात्रा के ये तीन तीर्थ आपस में अविरोधी तथा परस्पर पूरक हैं।

पं० विद्यानिवास मिश्र लोक की भारतीय अवधारणा के उद्गाता हैं। वे लोक की उदात्तता को लोक संस्कृति में अभिव्यक्त देखते हैं। वे लोक संस्कृति को अध्ययन तथा शोध का नहीं, जीवन का विषय मानते हैं। वे कहते हैं 'मैने अपनी माँ से जो सीखा है उसे मैं संग्रह की वस्तु या आलमारी में सजाने की वस्तु नहीं मानता। मैं उसे जीवन का प्रेरणा स्रोत मानता हूँ।' ये प्रेरणाएँ उन्हें अपने लोक के परिवेश से मिलीं, उसकी परंपराओं से मिलीं, उसके गीतों से मिलीं, लोक के शिल्प तथा लोक की कलाओं से मिलीं तथा उनके शत-शत निबन्धों का स्थाई भाव बन गई। उन्होंने साहस के साथ कहा कि लोक को हमने फोक मानकर बड़ी भूल की है। हम निर्मम संग्रही तथा तर्कशुन्य विश्लेषक हो गए। लोक जीवन-रस का स्रोत है। उनका विश्वास था कि लोक के उदात्त रूप को नृतत्व वैज्ञानिक अथवा समाज वैज्ञानिक रीति से समझा-समझाया नहीं जा सकता।

लोक तथा शास्त्र को पं० विद्यानिवास मिश्र भारतीय परंपरा के दो अक्षय स्रोत मानते हैं। वे कहते हैं, 'लोक दूब है। इसको उजाड़ने वाले उजड़ सकते हैं परंतु ये कभी नहीं उजड़ते, एक जगह से उजड़ते हैं तो फिर दूसरी जगह बस जाते हैं।' पं० विद्यानिवास मिश्र ने लोक का अध्ययन उसके समग्र परिवेश के साथ किया है। उनके अधिकांश निबन्धों की प्रेरणा ही नहीं उनके शीर्षक तक लोक से आयत्त हैं। लोक के फल-फूल, व्रत-त्योहार, नृत्य-गीत, रिश्ते-नाते, ऋतु मास आदि उन्हें लिखने के लिए उकसाते रहे हैं। विद्यानिवास मिश्र के निबंधों में लोक की अनेकानेक छवियां पग-पग पर मुखर हैं। लोक में समादृत फूलों के माध्यम से उन्होंने प्यार, समर्पण तथा दायित्व निर्वहण के अनेकानेक संदर्भ दिए हैं। ये सभी अपने संदर्भ में विधायक तथा लोक संग्रही वृत्ति के पोषक बने हुए हैं।

पंडित विद्यानिवास मिश्र के एक निबंध संग्रह 'भोर का आवाहन' की भूमिका में डॉ शिवप्रसाद सिंह ने लिखा है "लोकत संस्कृति की तरह 'परम्परा' भी विद्यानिवासजी की एक बहुत प्रिय थाती है। आज के भारत का बौद्धिक वर्ग इस मसले को लेकर काफी डूब-उतरा रहा है।" यहाँ उन्हों कल्पना, परंपरा, आधुनिक भारतीय संदर्भ नामक मिश्रजी के निबंध से एक संदर्भ भी दिया है। 'परम्परा शब्द धीरे धीरे बुद्धिजीवी लोगों के बीच में वर्जित होता जा रहा है। मैं समझता हूँ यह एक खतरनाक स्थिति है। वे आगे लिखते हैं 'आज के बुद्धिजीवी या तो परंपरा से ग्रस्त हैं या परंपरा से भागने के कोशिश में परेशान' स्वाधीनता के बाद राष्ट्रीय स्तर पर शिक्षा के काम में लगाए गए अधिकांश लोग भारत की परंपरा के शाश्वत मूल्यों के प्रति आस्थावान नहीं थे। भारतीय परंपरा के प्रति उनके मन में अवज्ञा रही और आधुनिकता के नाम पर वे परंपरा को अग्राह्य मानते रहे।

परंपरा को मिश्रजी सिद्ध वस्तु नहीं मानते हैं। अत: उसको रूढ़ि की तरह लिए जाने का खतरा भी उन्हें नजर नहीं आता। भारत में

परंपरा को सहेजना और उसकी श्रीवृद्धि करना संस्कृति का सबसे शुभ तथा काम्य लक्ष्य रहा है। ऋग्वेद में इदं नम ऋषिभ्य: पूर्वजेभ्य: पूर्वेभ्य: पथिकृद्भ्य: कहकर परंपरा के परिरक्षण, परिपोषण तथा संवर्धन का संकल्प व्यक्त किया गया है। इस मंत्र में ऋषियों (देखने वालों), हमसे पूर्व आए हुए लोगों, पहले जन्में लोगों तथा पथ का निर्माण करने वालों का पुण्य स्मरण किया गया है। पर, परंपरा को सहेजना तथा उसके संबंध में कुछ कहना सहज नहीं है। परंपरा को लेकर चलना हथेली पर अंगारा लेकर चलने की तरह दु:सह उद्योग है।

पंडित विद्यानिवास मिश्र हिन्दी की अप्रतिहत तेजस्विता में विश्वास कराते थे। उनका यह विश्वास भावुकता से नहीं, हिन्दी की सामर्थ्य की सही समझ से बना था। वे मानते थे कि हिन्दी बहुसंख्यक भारतीय समाज की स्वाभाविक अभिव्यक्ति है। हिन्दी ने अपना विकास किसी भाषा विशेष के खंडहर पर नहीं अपितु अपनी समावेशी शक्ति से किया है। सभी भारतीय भाषाओं से शक्ति संग्रह करके। विस्तार इसकी खास शक्ति है। वे मानते थे कि हिन्दी मात्र एक भाषा ही नहीं है, वह समस्त संस्कार की वाहिका है। पंडित जी हिन्दी को भारत के एक बड़े भू-भाग की चेतना कहते थे। उनकी स्थापना थे एकै भारतीय भाषाओं मेन बहुता कुछ समान है क्योंकि इनकी मूल अवधारणाएं संस्कृत से प्रकट हुई। उनका आग्रह था कि हम हिन्दी का तेज अपने में धारण करें तथा औसके संयत, उदार, कोमल तथा बज्र स्वभाव को अपनाएं।

पंडित विद्यानिवास मिश्र का स्मरण पूरी परंपरा का स्मरण है और उसके अनुरूप आचरण करने का निमंत्रण भी वे संस्कृत की अगाध ज्ञानराशि से संवलित, संमकालीन चिंतन से सुपरिचित तथा अपनी पीढ़ी के तत्वचिंतकों के समशील रहे। उनमें लिखने की अपार ऊर्जा, बोलने का आगाध उत्साह तथा चिंतन करने की अद्भुत क्षमता थी। इसके साथ था हिन्दी के माध्यम से भारत की मनीषा को सक्रिय रखने का शिवसंकल्प।

# नारायणी साहित्य अकादमी एवं केन्द्रीय सचिवालय हिन्दी परिषद के संयुक्त तत्वाधान में आयोजित राजभाषा सम्मेलन एवं अखिल भारतीय कवि सम्मेलन सम्पन्न

दिनांक 22 दिसम्बर कोलकाता के भारतीय भाषा परिषद के प्रांगण में केन्द्रीय सचिवालय हिन्दी परिषद एवं नारायणि साहित्य आकादमी के संयुक्त तत्वावधान में राजभाषा सम्मेलन एवं अखिल भारतीय कवि सम्मेलन का आयोजन हुआ।

प्रथम सत्र में राजभाषा सम्मेलन की शुरुआत जी एस टी एवं केन्द्रीय उत्पाद शुल्क के आयुक्त विजय कुमार मलिक, कोलकाता गर्ल्स महाविद्यालय की प्रिंसिपल डॉ० सत्या उपाध्याय, श्री आशुतोष प्रसाद तथा युनाइटेड बैंक ऑफ इंडिया कोलकाता के महाप्रबन्धक (राजभाषा) अब्दुल वाहिद ने दीप प्रज्ज्वलित कर किया, स्वागत भाषण एवं कुशल मंच संचालन का कार्यभार नारायणी साहित्य अकादमी के राष्ट्रीय सचिव श्री रणविजय कुमार श्रीवास्तव जी ने संभाला। मंच पर उपस्थित रहे श्री चन्द्रमणि ब्रह्मदल, पुष्पा सिंह आशुतोष प्रसाद, अब्दुल वाहिद, अध्यक्षा थीं डॉ० सत्या उपाध्याय साथ ब्रजमोहन सिंह भी उपस्थित थे। इस अवसर पर राजभाषा में अच्छे कार्य के निष्पादन हेतु सम्मानित किया गया है जिसमें यूनाइटेड बैंक ऑफ इंडिया, पंजाब नेशनल बैंक, ब्रेथवेट बर्न एण्ड जेसप कंस्ट्रक्शन कम्पनी को सर्वोत्कृष्ट राजभाषा श्री से सम्मानित किया गया। श्री मणिप्रसाद सिंह "राजभाषा गौरव" सम्मान से सम्मानित किया गया। इस अवसर पर रंजिता सिंह संपादित साहित्य की मासिक पत्रिका 'कविकुंभ' का भी विमोचन हुआ।

कार्यक्रम के दूसरे सत्र में कवि सम्मेलन किया गया। जिसमें सुश्री प्रमिला आर्य जी के द्वारा सरस्वती वंदना गाकर किया तथा कुशल मंच संचालन श्री विश्वजीत जी ने किया। अध्यक्ष गीतकार श्री योगेन्द्र शुक्ल 'सुमन' की। मंचासीन कवि एवं कवयित्रियों में प्रमुख रहे श्री नन्दलाल रोशन, श्री सुरेश चौधरी, श्री तारकनाथ गुप्ता, श्रीमती निलेश कोठारी, कोटा से आईं श्रीमती प्रमिला आर्य, देहरादून से श्रीमती रंजिता सिंह तथा शिमला से पधारे डॉ० विनोद गुप्ता तता स्थानीय कवियों में श्री रंजित भारती, श्री रामनाथ बेखबर, श्री अमित कुमार 'अम्बराठ' आमिली श्री नवीन कुमार सिंह श्रीमती आरती सिंह रहीं। धन्यवादज्ञापन रंजीत प्रसाद ने किया।

# सारे जहाँ से अच्छा हिन्दोस्ताँ हमारा

sanandedth@gmail.com

भगवान टीवी, अखबारवालों का भला करे, जो हमें हर वर्ष यह सूचना देते हैं कि हमारी आजादी की यह अमुक वर्षगाँठ है। इस दिन हमने गुलामी की बेड़ियों को झटके में तोड़कर स्वतंत्रता का शंखनाद किया था वरना आज के इस भागदौड़ के व्यस्त युग में किसे इतनी फुर्सत है कि वह इन वाहियात की बातों को याद रखे। कुछ लोगों को तो शायद यह भी याद नहीं है कि हम आजाद हुए भी हैं या नहीं? उन्हें तो सिर्फ इतना जरूर याद रहता है कि राशन की दुकान पर केरोसिन तेल किस दिन मिलता है और कितने बजे से लाइन लगानी पड़ती है। उन्हें यह भी याद रहता है कि इस माह मकान भाड़ा, दूधवाले तथा राशनवाले को कितना देना है। उन्हें आजादी से लेना भी क्या है? वे तो सिर्फ इतना जानते हैं, बकौल साज जबलपुरी–

चाँद तो बारहा नजदीक से गुजरा लेकिन,
कद के अहसास ने मुझको उसे छूने न दिया।

कुछ लोगो को यह तो मालूम है कि हम आजाद हो गये हैं, इसलिए वे आजादी को ओढ़-बिछा रहे हैं, उसका भरपूर लाभ उठा रहे हैं, दूसरों को भी परम स्वतंत्र न सिर पर कोऊ का पाठ पढ़ा रहे हैं उन्हें भी यह नहीं ज्ञान है कि आजादी की कौन-सी वर्षगाँठ है। उनका पी ए बतलाता है– सर, हमारी आजादी इतना साल पुरानी हो गयी। मतलब इस वर्ष उसकी फलां वर्षगाँठ है, बताइये उस दिन का मेनू क्या होगा? कहाँ-कहाँ झण्डात्तोलन करना है, झण्डा वन्दन करना है? कहाँ पर कैद किये गये कबूतरों को आकाश में उड़ाकर आजादी का, शान्ति सान्देश भेजना है। कहाँ-कहाँ आपके भौंकने के लिए मंच बनवाना है, ताकि आप उन भूखो-गरीबों को अपनी आजादी के बारे में बता सकें। कृपया यह भी बतायें कि आपके इस कार्यक्रम की फोटो व वीडियो फिल्म भी बनेगी या केवल अखबारवालों को ही बुला लेने से काम चल जाएगा? आजादी की वर्षगाँठ के उपलक्ष्य में किस ठेकेदार को, किस पाइव-स्टार होटल में पार्टी देने का निर्देश दे दूँ? कृपाकर इतना और बता दीजिए कि भाषण देते समय आपकी आँखों में घड़ियाली (नकली) आँसू निकालने के लिए पिपरमेंट की व्यवस्था कर दूँ या किसी तीखे 'बाम' का। आजादी के दिन आँसू निकालना ही पड़ेगा, वरना गरीबों का महीसा, दलितों का भगवान आपको कौन मानेगा? यह तो आप जानते ही हैं–

कबिरा हँसना दूर कर, रोने से कर प्रीत।
बिन रोये कित पाइये, प्रेम पियारे मीत।।

इस आजाद मुल्क में कई इलाके ऐसे भी हैं, जहाँ अखबार तो जाता है, लेकिन पढ़नेवालों की संख्या अंगुलियों पर गिनी जा सकती है। सरकारी साक्षरता की देवी अभी तक वहाँ अपने दर्शन नहीं दे सकी है। टी वी लगभग प्रत्येक घर में है, क्योंकि यह आज के युग में भोजन से भी जरूरी हो गया है, मगर इन पर बुद्धु बक्से का भी कोई असर नहीं होता, कारण जब बुद्धु बक्से के बोलने का समय होता है तो बिजली मैया रूठकर चली जाती है। हाँ, जब कभी स्कूली बच्चे अपने हाथों में तिरंगा झण्डा लेकर, महात्मा गाँधी की जय, नेहरू की जय, भारतमाता की जय की जयकारें लगाते हैं, तब इन्हें अहसास हो जाता है कि आज का दिन जरूर ही कुछ विशेष लिए हुए है, मतलब सामान्य दिनों से हटकर है।

आजादी के बाद हमारा देश निरन्तर प्रगति कर रहा है, यह हम नहीं, हमारे देश के आजादी के रखवाले कहते हैं, उनका ही विचार है कि–

आज एक भी आदमी रोटी के लिए नहीं मर रहा है
सभी चावल-गेहूँ खा रहे हैं
चीनी-तेल के लिए भले, लाइन लगा रहे हैं।

इनकी बातों में सच्चाई है भी। आज पैदल चलनेवाला साइकिल पर, मोटरसाइकिल वाला कार पर और कार वाला हवाई जहाज पर सैर कर रहा है। क्या यह प्रगति नहीं है? आखिर इसी प्रगति का सपना तो हमारे रहनुमा देखते थे न और आज भी देख ही रहे हैं। प्रत्येक देशवासी आकाश की ऊँचाइयों तक प्रगति करेगा, कोई भूखा नहीं रहेगा, सबके सर पर छत होगी, भले ही वह आकाश की ही क्यों न हो।

जमीन पर बैठे लोगों को हमें उठाना है, देश की प्रगति में हमें उन्हें

भी शामिल करना है। आजादी के बाद से ही हमारा प्रयास जारी है (बावजूद इसके लोग बैठे हुए हैं) लोगों को उठाने के लिए कई योजनाएँ बनाते हैं। हमारे रहनुमा, नये विभाग खोलते हैं, अफसर नियुक्त करते हैं, फिर भी लोग जमीन नहीं छोड़ रहे हैं, तो इसमें बेचारे कर्णधारों का दोष क्या है? जब डूबने वाला खुद डूबना ही चाहता है, तो बचानेवाले को किसी पागल कुत्ते ने तो नहीं काटा है न, जो वह व्यर्थ ही अपने महँगे कपड़े को गीला करे पानी में कूद कर।

आजादी के बाद हमने प्रगति की है, इसमें शक नहीं है, हमने लूटने-खसोटने की दिशा में प्रगति की है, गबन, गोटाले की दिशा में रिकार्ड बनाया है, हत्या, लूट, बलात्कार के ग्राफ को ऊँचा किया है। भाई-भतीजावाद, आतंकवाद, उग्रवाद, सम्प्रदायवाद की दीवारों को मोटा किया है। यह कम उपलब्धि नहीं है देश के लिए हमारे रहनुमाओं द्वारा। कुछ न कुछ तो किया ही है इन्होंने। इतना तो पर्याप्त है ही हमें 21 वीं सदी में जीने के लिए। सिरफिरे हैं जो यह पूछते हैं –

सच सच बताओ
क्या वाकई सारे जहाँ से अच्छा
हिन्दोस्ताँ हमारा है?
सच्चाई तो यह है प्यारेलाल
न बीसवीं सदी में कुछ हमारा था
न इक्कीसवीं सदी में कुछ तुम्हारा है
फिर भी सारे जहाँ से अच्छा
हिन्दोस्ताँ हमारा है।


**अब आर्थिक सहयोग देना हुआ और आसान सहयोगकर्ताओं की सूची प्रतिमाह प्रकाशित होती है**

# SADINAMA

Current Account No. 03771100200213
**PUNJAB AND SIND BANK**
IFSE CODE : PSIB0000377
Bhawanipore Branch, Kolkata (West Bengal)
Phone No. For SMS To Inform - 09231845289
PLZ SMS WITH YOUR FULL POSTAL ADDRESS


**आपकी चिरपरिचित स्नेहाकांक्षी और सहयोगी पत्रिका "सदीनामा" बहुआयामी, सामाजिक, आर्थिक, साहित्यिक, सांस्कृतिक राजनीतिक आदि विभिन्न मुद्दों को समय-समय पर उठाती रही है जो कोलकाता ही नहीं वरन अखिल भारतीय स्तर पर सेतु-संवाद का वाहक बना है। इस क्रम में हमने निर्णय लिया है कि आज के दौर में सीमित हो रहे साहित्यिक सांस्कृतिक संदर्भों के बीच पुस्तक समीक्षा गायब होती जा रही है और आलोचनात्मक विवेक पूर्वाग्रह और गुटों से संचालित। हम पुस्तक समीक्षा का कालम नियमित रूप से शुरू करने जा रहे हैं। देश के सभी प्रकाशकों, लेखकों से आग्रह है कि "सदीनामा" के लिए समीक्षार्थ पुस्तकें "सदीनामा" के पते पर भेजें। अगर कोई ई-पुस्तक, ई-मैगजीन हो तो उसे brajmohansingh450@gmail.com, मोबाइल-9831770876 पर भेजें। डाक से भेजने का पता–48/49A, Swiss Park, Kolkata - 700 033**
**मीनल - 8296808103**

व्यंग्य

# जनता की जीत!

**कमलेश कमल**
डब्ल्यू-31, सैक्टर -11
नोएडा, उ०प्र०
मोबाइल
9871948930

जी हाँ, यह जनता की विजय है मजबूत होते लोकतंत्र की निशानी है। समति की मोहर है नोटबंदी व जी.एस.टी. पर। बेशक जिसकी वजह से आमजन अब भी क्यों न कराह रहा हो। बेबसों को लाले क्यों न पड़ गये हों निवालों के। पर यह शिकस्त है वंशवादी राजनीति की। दल विशेष की भी, जिसने देश पर सत्तर साल तक शासन किया। लूटा आम-अवाम को। भ्रष्टाचार की जननी रही ये पार्टी।

मगर आप यह मत कहना कि बस इत्ती सी बात समझने के लिए आपने सत्तर साल लगा दिये। अब होश आया। इतनी मंद बुद्धि है आपकी। याकि आप अपने मानसिक पूर्वजों की तरह सयाने हैं। वे जो काम छोड़ गये उसी को आगे बढ़ाने की कोशिश में लगे हैं। आपकी करतूतों से बढ़ जाता है देश मध्य युग की ओर। महसूस करने लगे हैं लोग राम-राज्य। सो शंबूकों की शामत क्यों नहीं आयेगी। अफराजुल जैसे मजदूरों को मजहब विशेष में जन्म लेने की कीमत क्यों न चुकानी पड़ेगी? उत्पीड़ितों की आवाज को बुलन्द करने वाले चन्द्रशेखर ऊर्फ रावण भी कीमत चुका चुके हैं। वे भी तो जनतंत्र की सीमा लांघ गये थे।

अब आप 'करणी सेना' या हिन्दू महासभा, हिन्दू रक्षा दब जैसे संगठनों की ओर उंगली मत उठा देना। भला राम-भक्तों व दलित हमदर्दों की क्या समानता? हो सकता है वे पार्टी विशेष के 'कट-पुतली' कारिन्दे हों। जो सामान्य हो रही है। लौट रहा है वतन में अमन। लोग साँझा करने लगे हैं आपस में गम। हाँ, पदमावती के वंशजों का तभी तो स्वाभिमान जागा। और तब तक जागा रहा, उत्तर प्रदेश निकाय चुनाव परिणाम पार्टी विशेष के पक्ष में नहीं आ गये।

आप चीखो! चिल्लाओ! लगाओ गड़बड़ी का आरोप! दोष दो बेचारी बेजान ई.वी.एम. मशीनों को! कहो, शहरी इलाकों में जहां-जहाँ ई.वी.एम. मशीनों से चुनाव हुए भाजपा कामयाब रही। पर वैलेट से वोट हुए इलाकों में विपक्ष सफल रहा, क्यों? तुलना करो वैलट पेपर व ई.वी.एम. से मिले मतों की। हेराफेरी के प्रमाण मजबूत भी हों, भगवा पार्टी को तब भी फर्क नहीं पड़ने वाला। इसलिए भी नहीं फर्क पड़ना कि आज मीडिया एक दम देश-भक्त है। सरकार के खिलाफ बोलने में उसकी घिग्घी बंधती है। और कुछेकों को तो प्रधानमंत्री का महिमा मंडन करने से ही फुर्सत नहीं मिलती। फिर अमित शाह भी तो हैं, जो कि सत्तारूढ़ दल के मुखिया हैं। जो ठान लेते हैं, पूरा करने के बाद ही दम लेते हैं। दुश्मन को बचाव का वक्त नहीं देते। चिढ़े हुए लोग तभी तो उन्हें जस्टिस लोया की हत्या में लपेटने की कोशिश कर रहे हैं।

मगर इन्हें नहीं पता कि वे किस मिट्टी के बने हैं? कितने दूध के धुले हैं। सो उन पर किसी तरह के दाग नहीं दिख सकते। लोगों ने जय शाह की तरक्की को लेकर क्या सवाले उठाये थे? उन पर हरेन पांड्या, जो कि नरेन्द्र मोदी के समय में गुजरात के गृहमंत्री थे की हत्या को लेकर भी शक है। नोटबंदी के समय महेश शाह से भी उनके रिश्ते जोड़े गये थे। कहा गया था कि गाड़ी में पकड़े गये हजारों करोड़ों की कीमत के नोट उन्हीं के हैं।

कमाल है! वे एक संप्रभु राष्ट्र की सत्तारूढ़ पार्टी के सर्वेसर्वा हैं और प्रधानमंत्री के अजीज भी भला उनकी ओर कौन नजर डालेगा? नोट बदल वाना क्या उनके लिए इतना बड़ा काम है? जबकि वे अपने लक्ष्य से कभी विफल नहीं होते। प्रतिद्वंद्वी को तो पनपने ही नहीं देते! हाँ, खुद को पाक-साफ दिखाने के लिए वे किसी भी हद तक जा सकते हैं! फिर इस देश को भगवा रंगने में क्या सिर्फ मोदी जी का योगदान है? इस भगवाई शकुनि की चालों को क्या कोई नकार सकता है?

नहीं, बिल्कुल भी नहीं! अपनी विशेष बुद्धिमत्ता के लिए जाने जाने वाले अमित वे अपने दुश्मन को ऐसी पटखनी देते हैं कि वह नितीश कुमार बनने को विवश हो जाये। अगर नहीं तो लालू की तरह जेल जाओ। भुगतो पालतू न बनने का दंड। तनाव में रहो सी.बी.आई. के कथित तोता के इशारे पर! हाँ, आज के दौरे में भला कौन शरद यादव की गति प्राप्त होना चाहेगा। वह भी तब जब देश में जनतंत्र

चरम पर हो। ई.वी.एम. को लेकर विपक्ष हलकान हो।

हाँ, जब देश में चुनाव आयोग की नीयत पर सवाल उठने लगे। चिल्लपों करने लगें विरोधी। और भगवा दल व उनके कर्ता-धर्ता गर्वा रहे हों। छटपटाते विपक्षियों को चिढ़ा रहे हों। कर रहे हों नित नये सूबों पर कब्जा। वह भी तब जब पटेलों, अल्पेशों, जिग्नेश मेवाणियों ने अपनी पूरी ताकत लगा दी हो। और हार्दिक तो प्रधानमंत्री को ललकारते-ललकारते खुद भी चुनाव हार गये हों।

महोदय, कुछ तो जादू है उनमें। कुछ तो खासियत है इस जोड़ी में। याकि फिर आमजन गिरगिट चंद बन रहा है। जी हाँ, हवा का रूख देखकर निर्णय लेने वाला। डरपोक। स्वार्थी। मौका-परस्त और बिकाऊ भी। हाँ, बिल्कुल भौदू। राजनीतिज्ञों के जासें में आने वाला। शायद तभी तो गुजरात में भगवा-दल अपना परचम फहराने में कामयाब हुआ।

अगर नहीं तो सूरत के व्यापारियों का गुस्सा कहां गया ? कहां गयी पटेलों की नाराजगी ? और दलितों का आक्रोश भी, जो कि ऊना में गौ-भक्तों के द्वारा गरीब दलितों के साथ हुई ज्यादती के बाद सामने आया था। कपास किसानों के सवाल क्या हल हो गये ? पूरे चुनाव में मजदूरों की दशा पर तो कोई बात ही नहीं हुई ? फिर क्यों करे ? चमकते गुजरात में अगर श्रमिक-शोषण को नेता सवाल बनायेंगे तो प्रधानमंत्री जी की मजदूर विरोधी छवि नहीं बनेगी। और फिर कौन खुद को अफजल गुरु गैंग में शामिल करवाये। क्योंकि वहाँ श्रम कानून बेमतलब हैं। नौकरी नियमित होना एक सपना। हाँ, दुनियां सहित देश भर में बेशक 8 घंटे की ड्यूटी है पर गुजरात में 12 घंटे। ऐसे में नमक मजदूर व उनकी संतानों के स्वास्थ्य-शिक्षा की ओर किसका ध्यान जाये ?

हाँ, भला कौन सुने आमजन की व्यथा। किसकी जुबां पर आयें गुजरात में समुद्र के किनारे नमक बनाने वाले मेहनतकश ? जो कि नमक बनाते हैं। जिस नमक के बिना शायद प्रधानमंत्री का खाना भी बेस्वाद हो जाये। मगर इन मजदूरों की जिन्दगी बदहाल है। जिन्हें सेफ्टी शूज, हाथों के दस्ताने भी उपलब्ध नहीं। कार्य-स्थलों से अस्पताल दूर है। फिर मजदूर बस्तियों की ओर भी किसका ध्यान जाता है। उस दलित-बस्ती की ओर भी किसी की नजर नहीं गयी, अखबारी प्रतिनिधि की भी नहीं, जो कि सोमनाथ मंदिर के नजदीक बसी है। वहाँ बना शौचालय गुजरात के अवाम का विकास बयां कर रहा है। अमिताभ जी, देखिये न, उसमें दरवाजे तक नहीं! सो भला वो कैसे कुंडी बंद करे ? गरीबों की बेटियाँ-बेटियाँ कैसे प्रधानमंत्री के स्वच्छता मिशन में हिस्सेदारी करें ?

खैर, उत्तर प्रदेश के बाद गुजरात में भी प्रधानमंत्री की नाक बच गयी। भक्तों को 'नमो-नमो' करने का अवसर मिल गया। फिर क्यों न मिलता ? चुनावों में मीडिया की क्या कम कृपा रही ? वह तो दिन-रात प्रधानमंत्री के महिमा-गान में लगा रहा। पेश करता रहा उन्हें मसीहा के रूप में गौण हो गये अवाम के मुद्दे। यह सब करने में मीडिया बेशर्मी की हद तक गया। मगर वह बता पाया, उगलवा पाया, कि राहुल गांधी हिन्दू है या गैर हिन्दू। जनेऊधारी, शिव-भक्त याकि कुछ और। मीडिया के लिए यह सब जानना बहुत जरूरी था। नहीं तो हवा का रूख कैसे बदलता ? कैसे आम-अवाम शोषकों व उनके मसर्थकों के साथ खड़ा होने को बाध्य होते।

धन्य हो, सत्ता के चाटुकारों! आपके शह व सहयोग ने तथाकथित देश-भक्तों के पक्ष में ऐसा माहौल बनाया, मानो जनता भगवा-दल के पीछे मर-मिटने को तैयार है। बदहाल रहकर भी, व्यक्ति विशेष में उसकी आस्था है। वह व्यक्ति विशेष में ही अपनी मुक्ति देखती है।

हाँ, अगर वे पार्टी विशेष का महिमा-मंडन नहीं करते, नहीं दिखाते उसे मासूम, कि सारा विपक्ष उसकी जान का प्यासा है। और वे देश के लिए कुछ भी सहने को तैयार। तो वे क्या जैसा कि आरोप लग रहा है, वे ई.वी.एम. विशेषज्ञों की मदद ले पाते! दिखा पाते अपनी करतूत! बदल पाते हार को जीत में।

कुछ भी सही, मगर आमजन खुद को ठगा महसूस कर रहा है


## विज्ञापन दरें :

### पूरे देश के लिए एक समान

| साईज | | रु० |
|---|---|---|
| पूरा पेज | - | 8000 |
| आधा पेज | - | 5000 |
| एक चौथाई | - | 3000 |

1 कॉ. × 1 से.मी. 250

# गाँधी के बाद छुआछूत का सामाजिक पाप खत्म हुआ?

**रामनारायण झा**
मो०
8582910821

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने "आत्मकथा" में "नील का दाग" शीर्षक के अन्तर्गत साल 1917 में बिहार में जिस छुआछूत का जिक्र किया है, वह अस्पृश्यता सौ साल बाद आज भी बिहार तथा अन्य प्रदेशों में सामाजिक कोढ़ बना हुआ है छुआछूत सामाजिक पाप बनकर भारतीय समाज को कलंकित कर रहा है। बापू द्वारा बिहार यात्रा का यह प्रसंग आज भी अपनी सार्थकता सिद्ध कर रहा है।

साल 1917 के आरम्भ में जब गाँधीजी राजकुमार शुक्ल (जो चम्पारण के किसान थे तथा गाँधी को कलकत्ता से चम्पारण ले जा रहे थे।) के साथ कलकत्ता से रवाना होकर दूसरे दिन पटना पहुँचे तो गाँधीजी लिखते हैं–

"पटना की मेरी पहली यात्रा थी। वहाँ किसी के साथ मेरा ऐसा परिचय नहीं था, जिससे उनके घर उतर सकूँ। मैंने यह सोच लिया था कि राजकुमार शुक्ल अनपढ़ किसान हैं, तथापि उनका कोई बसीला तो होगा ही। ट्रेन में मुझे उनकी कुछ अधिक जानकारी मिलने लगी पटना में उनका परदा खुल गया। राजकुमार शुक्ल की बुद्धि निर्दोष थी। उन्होंने जिन्हें अपना मित्र मान रखा था वे वकील उनके नित्र नहीं थे, बल्कि राजकुमार शुक्ल उनके आश्रित जैसे थे किसान मुवक्किल और वकील के बीच चौमासे की गंगा के चौड़े पाट के बराबर अन्तर था।

मुझे वे राजेन्द्र बाबू के घर ले गये। राजेन्द्रबाबू पुरी अथवा और कहीं गये थे। बंगले पर एक दो नौकर थे। मेरे साथ खाने की कुछ सामग्री थी। मुझे थोड़ी खजूर की जरूरत थी। बेचारे राजकुमार शुक्ल बाजार से ले आये।

पर बिहार में तो छुआछूत बहुत बड़ा रिवाज था। मेरी बालटी के पानी के छींटे नौकर को भ्रष्ट करते थे। नौकरको क्या पता कि मैं किस जाति का हूँ। राजकुमार शुक्ल ने अन्दर के पाखाने का उपयोग करने को कहा। नौकरने बाहर के पाखाने की ओर इशारा किया। मेरे लिए इसमें परेशान या गुस्सा होने का कोई कारण न था। इस प्रकार के अनुभव कर-करके मैं बहुत पक्का हो गया था। नौकर तो अपने धर्म का पालन कर रहा था और राजेन्द्रबाबू के प्रति अपना कर्तव्य पूरा कर रहा था। इन मनोरंजक अनुभवों के कारण जहाँ राजकुमार शुक्ल के प्रति मेरा आदर बढ़ा, वहाँ उनके विषय में मेरा ज्ञान भी बढा। पटना से लगाम मैंने अपने हाथ में ले ली।"

छुआछूत से ग्रसित जिस "घृणित भावना" ने अनजाने में गाँधीजी को घर से बाहर बने पाखाने का रास्ता दिखला दिया था वह हेय दृष्टि आज भी कटु सत्य बनकर भारतीय समाज में घृणा, द्वेष, वैषम्य, वैमनस्य तथा वर्ण द्वेष का जहर घोल रहा है।

विगत सौ वर्षों में बहुत परिवर्तन हुए हैं। हम गुलामी से मुक्ति पाकर स्वतंत्र हुए। 70 सालों से अपनी बनायी हुई संविधान से लोकतांत्रिक सरकार चला रहे हैं। फिर भी सदियों से जकड़े छुआछूत की संकीर्ण भावना से हम मुक्त नहीं हो पाए हैं। भारतीय समाज आज भी छुआछूत तथा बड़ा-छोटा जात-पाँत जैसे संकीर्ण मानसिकता का गुलाम बना हुआ है।"


## आगे आएं हाथ बढ़ाएं

**आपको पत्रिका अच्छी लगी हो तो**

- नियमित पढ़ने के लिए – सदस्य बनें
- स्तरीय पत्रिका लगे – रचनाएं भेजें
- पुराने सदस्य हैं - नवीनीकरण कराए
- किसी गतिविधि को बढ़ाना है– हमें लिखें
- कोई असाध्य रोग है– कोलकाता आएं।
- कोई योजना है– हमें लिखें

गंगासागर/पुरी/दार्जिलिंग/सिक्किम/ उत्तर पूर्व जाना है– हमारे विशेषांक पढ़ें।

# रेल में जइब, मग चुरइब, गुटखा खइब त बायो टॉयलेट खाक चली

प्रधानमंत्री मोदी ने वर्ष 2014 में सत्ता संभालते ही पर्यावरण की बेहतरी के अपने प्रयासों को आगे बढ़ाते हुए रेलवे के लिए 2019 तक सभी ट्रेनों में बायो-टॉयलेट लगाने का लक्ष्य तय किया, जिसके लिए गंभीर प्रयास भी किए जा रहे हैं। भारतीय रेलवे की पटरियों को गंदगी से मुक्त करने के लिए सरकार ने 2016-17 वित्त वर्ष में 17 हजार बायो टॉयलेट्स लगाने की घोषणा की थी। संसद में रेलवे बजट पेश करने के दौरान रेल मंत्री सुरेश प्रभु ने डिब्रूगढ़ राजधानी ट्रेन का भी उल्लेख किया था। यह ट्रेन दुनिया की पहली वायो-वैक्यूम टॉयलेट युक्त ट्रेन है, जिसे भारतीय रेलवे ने पिछले साल पेश किया ता।

**हम सभी जानते हैं कि भारतीय रेल नेटवर्क विश्व का सबसे बड़ा रेलवे नेटवर्क है, इसके अन्तर्गत प्रतिदिन 13,313 पैसेंजर ट्रेने चलायी जाती है, जिनमें 54,506 कोच होते हैं और वह 22.21 करोड़ यात्रियों को एक जगह से दूसरी जगह लाने-ले जाने का काम करते हैं।**

अब तक इन ट्रेनों में पारम्परिक तरीके के फ्लश टॉयलेट्स यूज होते रहे हैं, इन पारंपरिक शौचालयों में मानव मल सीधे पटरियों पर गिरता है। इनमें न केवल ट्रैक पर गंदगी फैलती है, बल्कि रेल पटरियों की धातु को भी नुकसान पहुँचता है साथ ही पर्यावरण की दृष्टि से भी यह सही नहीं है।

**क्या है बायो टॉयलेट**

बायो टॉयलेट की नई तकनीक यह भी सुनिश्चित करती है कि यह शौचालय बदबू और गंदगी रहित हो और इनमें कॉकरोच और मच्छर भी न पनपे। बायो टॉयलेट भारतीय रेलवे और डिफेंस रिसर्च एंड डेवलपमेंट ऑर्गनेनाइजेशन (DRDO) द्वारा संयुक्त रूप से विकसित किए गए हैं। इनमें शौचालय के नीचे बायो डाइजेस्टर कन्टेनर में अनेरोबिक बैक्टीरिया होते हैं, जो मानव मल को पानी और गैसों में तब्दील कर देता है। इन गैसों को वातावरण में छोड़ दिया जाता है जबकि दूषित जल को क्लोरिनेशन के बाद पटरियों पर छोड़ दिया जाता है, हालांकि इन टॉयलेट्स का मेंटेनेंस थोड़ा डेलिकेट होता है।

ऐसे टॉयलेट्स के नियमित भौतिक निरीक्षण, ब्लॉक होने पर टॉयलेट शूट की सफाई और क्लोरीनेटर में क्लोरीन गोलियों को चार्ज करने की जरूरत होती है। डीआरडीओ के पूर्व वैज्ञानिक डॉक्टर विलियम सिल्वमूर्ति के अनुसार, "यह बेहद नई तरह की तकनीक है। DRDO ने एक ऐसी तकनीक का विकास किया है, जिसमें

साइक्रोफिलिक बैक्टीरिया के संकाय (Storage) की व्यवस्था है। इसे अंटार्कटिका से लाया गया और लैब में रखा गया। यह मल को पानी, कार्बन डाई ऑक्साइड और मीथेन में बदल देता है।"

कैग रिपोर्ट 2016-17 के अनुसार सरकार द्वारा जून 2016 तक रेल विभाग द्वारा विभिन्न रूटों की प्रमुख ट्रेन में करीब 37,000 बायो टॉयलेट इंस्टाल किए जा चुके हैं। मार्च (2017-18) तक इस संख्या को बढ़ाकर 40,000 किए जाने का लक्ष्य है। फिर 2018-19 तक 60,000 बायो टॉयलेट्स इंस्टॉल किए जाने हैं।

सरकार ने स्वच्छ भारत मिशन के तहत अपनी इस महत्वाकांक्षी परियोजना के लिए रेल मंत्रालाय को करीब 1,155 करोड़ रुपये का बजट आवंटित किया। इसके अन्तर्गत कुछ 55,000 रेल कोचेज में करीब 1.40 लाख बायो-टॉयलेट्स को इंस्टॉल करने का लक्ष्य रखा गया है। यही नहीं रेलवे ने ट्रेन टॉयलेट्स के मौजूदा रूप-रंग में बी काफी बदलाव किया है। अब ट्रेन के बाथरूम में स्टेनलेस स्ट्ली के मग, डस्टबिन, हैंडवॉश सैनिटाइजर आदि सुविधाएं देखने को मिलती है। साफ-सफाई की स्थिति भी पहले से बेहतर और नियमित है। अगर किसी तरह की कोई शिकायत हो, तो अब आज सीधे रेल मंत्रालय को इसकी शिकायत कर सकते हैं। चंद मिनटों में ही आपकी समस्या सुलझाने का प्रयास किया जाता है। जाहिर सी बात है कि यह सब कुछ यात्रियों की सुविधाओं को ध्यान में रखते हुए किया जा रहा है।

**रेलवे की चुनौतियाँ**

इस बात का आकलन भी हम कैग रिपोर्ट 2016-17 में बखूबी लगा सकते हैं। आए दिन रेल मंत्रालय को इन टॉयलेट्स के जाम होने, इनकी कार्यप्रणाली ठप्प पड़ने या फिर इनसे दुर्गंध आने की शिकायतें मिलती रहती हैं। लगभग एक-तिहाई सुपरवाइजरी स्टाफ अभी भी बायो टॉयलेट्स को मेंटेन करने के बारे में नहीं जान रहे हैं. यहाँ तक कि ट्रेन यात्री भी बायो-टायलेट्स के उपयोग और इसके रख-रखाव में बरती जाने वाली सावधानियों से पूरी तरह परिचित नहीं है।

कैग रिपोर्ट की माने तो जो बायो टॉलेट्स अब तक इंस्टॉल किये गये हैं, पिछले वित्त वर्ष में उनके ही औसतन चार-पांच बार जमा होने की शिकायतें मिल चुकी हैं और बजाय इन शिकायतों के कम होने के, यह दिन-ब-दिन बढ़ती ही जा रही है। अकेले बेंगलुरु कोचिंग डिपो में ही पिछले वित्तीय वर्ष में औसतन हर पांचवे दिन में जान की शिकायत आई। इसी वजह से रेलवे वर्ष 2016-17 में बायो टॉयलेट्स के फिटमेंट और ट्रो फिटमेंट के लिए आवंटित आधी राशि का भी उपयोग नहीं कर पाया। आखिर करता भी कैसे? पहले मौजूदा समस्या से निपटता या आगामी योजनाओं को अमल में लाता।

रिपोर्ट में बताया गया है कि पिछले एक साल में कुल प्राप्त 1,99,689 शिकायतों में से पैसेंजर्स की ओर से टॉयलेट जाम की सबसे ज्यादा शिकायतें (1,02,792) प्राप्त हुई। इसके बाद बदबू की शिकायतें (16,375) टॉयलेट्स के सही परिचालन में बाधा संबंधी शिकायतें (11,462), डस्टबिन के अनुपलब्धता संबंधी शिकायतें (21,181), मग नहीं होने की शिकायतें (22,899) तथा अन्य शिकायतें जैसे कि बॉल वॉल्व का फेल होना या वायर रोप का गायब होना संबंधी शिकायतें (24,980) प्राप्त हुईं।

सियालदह, बिलासपुर और पोरबंदर कोचिंग डिपो में डस्टबिन चोरी की अबतक सबसे ज्यादा शिकायतें आई हैं। बिलासपुर कोचिंग डिपो से एक साल में 817 बायो टॉयलेट्स लगाये गये, जिनमें 3,601 डस्टबिन चोरी की शिकायते मिलीं।

सियालदह कोचिंग डिपो की 26 ट्रेनों में 1,304 ऐसे टॉयलेट्स लगाये गये, जिनमें डस्टबिन चोरी की 3,536 शिकायतें प्राप्त हुई। वही पोरबंदर डिपो में जहाँ कुल 14 ट्रेनों में 846 बायो टॉयलेट्स लगाये गए, उनमें से डस्टबिन चोरी की 2,933 शिकायतें मिलीं। उत्तर प्रदेश के गोरखपुर डिपों में सबसे ज्यादा मंग चोरी (ऐसे 2200 टॉलेट्स से करीब 16000 मगों की चोरी) की शिकायतें मिली। कुल सबसे ज्यादा शिकायतें बेंगलुरु डिपो से प्राप्त हुई, हालांकि उनमें चोरी की शिकायत एक भी नहीं थी बल्कि सारी शिकायतें मेंटेनेंस को लेकर की गई थीं।

**जानकारी के अभाव में नहीं सफल हो पा रही योजनाएं**

इसमें कोई दो राय नहीं है कि बायो टॉयलेट का कॉन्सेप्ट अपने आप में एक आइडियल कॉन्सेप्ट है, जो कि प्रधानमंत्री के स्वच्छ भारत मिशन का समर्थन करता है। लेकिन अगर जमीनी स्तर पर देखें, तो योजनाएं उस तरह से सफल नहीं हो पा रही है, जितनी सरकार इनके होने की अपेक्षा रखती है। अन्य तकनीकी समस्याओं

के साथ-साथ एक बड़ी समस्या लोगों के इसके इस्तेमाल को लेकर जानकारी का अभाव होना भी है।

जिस देश में लोगों को शौचालय के तरीकों के बारे में बताने की जरूरत पड़ती हो, जहाँ आबादी का एक बड़ा हिस्सा अब तक वेस्टर्न टॉयलेट को भी यूज करना नहीं जानता हो, वहां बायो टॉयलेट्स के कॉन्सेप्ट को इतनी आसानी से अपनाना थोड़ा मुश्किल है। हालांकि इनके उपयोग में ऐसा कुछ अनोखा नहीं है, जिसे स्पेशल क्लास में सीखने की जरूरत पड़े, फिर भी इनके मेंटेनेंस की जानकारी तो होनी ही चाहिए।

**अगर हम सरकार से सुविधाएं चाहतेहैं तो हमें भी एक अच्छे रेल यात्री के तौर पर अपनी जिम्मेदारियाँ निभानी होंगी।**

यात्रियों को ध्यान रखना होगा कि वह इन शौचालयों में प्लास्टिक बोतल, चाय का कप, कपड़े, सैनेटरी नैपकिन, नैपी, प्लास्टिक की थैलियाँ, गुटखा पाउच समेत अन्य वस्तुएं न डालें। इन चीजों को शौचालय नहीं बल्कि कूड़ेदान में डालने की जरूरत होती है। हम भारतवासी शिकायतें करने में तो माहिर हैं, लेकिन उन शिकायतों का समाधान कैसे हो, इस पर शायद ही कभी गंभीरता से विचार करते हैं। "रेल आपकी संपत्ति है", लेकिन इसका यह मतलब नहीं कि हम इस संपत्ति को नुकसान पहुँचाएं या इसकी चीजें चुराएं।

**साभार** : the post मग चुराएंगे, पान-गुटखा, डायपर डालेंगे, तो रेलवे का बायो टॉयलेट कैसे सफल होगा ?

appeared first and originally on Youth Ki Awaaz।

# कैसे लिखें बिना गलती किये लेख

आपने 4-5 घंटे एक आर्टिकल पे खर्च किए, उसे हमने सदीनामा में छापा और लो! एक मेल आया कि भाई आर्टिकल में फैक्ट सही नहीं हैं। हो गई ना इतनी मेहनत खराब। कई बार ना चाहते हुए भी हमसे गलतियाँ हो जाती हैं, आपका इरादा तो सही होता है लेकिन एक गलत फैक्ट या एक गलत जानकारी के कारण सारी मेहनत पर पानी फिर जाता है।

हो सकता है कि ऊपर कही बातें हतोत्साहित करने वाली लगें, लेकिन इस तरह की गलतियों से बचा जा सकता है। आज हम यहाँ आपको बेहद आसान शब्दों में बताएंगे कि लिखते समय इन गलतियों से कैसे बचा जाए।

**1. मुझे यह कैसे पता है ?**

अच्छा फर्ज कीजिए कि आपने गौरी लंकेश की हत्या पर निजी विचार लिखे और आपने लिखा कि भारत 2017 में पत्रकारों के लिए सबसे खतरनाक देश रहा। बैशक गौरी लंकेश की हत्या एक नृशंस अपराध था और भारत में पिछले कुछ समय में प्रेस की आजादी पर हमले बढ़े हैं। लेकिन क्या भारत 2017 में पत्रकारों के लिए सबसे असुरक्षित देश था ? तो आपको बता दिया जाए कि आकड़े ऐसा नहीं कहते।

अगर आपने लिखने से पहले यह सवाल खुद से किया होता कि 'मुझे यह कैसे पता है ?' तो आपने 2017 में दुनिया के अलग-अलग देशों में हुई पत्रकारों की हत्याओं की तुलना की होती और यह गलत जानकारी आपके लेख में नहीं होती। खुद से सवाल पूछने पर कि कोई जानकारी हमें कैसे पता है, हमें अपने अन्दर के पूर्वाग्रहों को भी खत्म करने में मदद मिलती है।

**2. आपने यह कैसे जाना ?** --आपने लेख में पत्रकारों के लिए सबसे खतरनाक देश होने वाली बात सिर्फ अपनी निजी राय या सहजवृत्ति के आधार पर लिखी। इस तरह का लेख लिखते हुए खुद से पहला सवाल पूछकर, पाठकों को गलत जानकारी जेने से बचा जा सकता है। ध्यान रखें की आप खुद सभी जानकारियाँ या विचारों के स्रोत नहीं हैं। कभी कभी आपको इनके (जानकारियों और विचारों) के लिए अन्य स्रोतों पर भी निर्भर होना पड़ता है। अब अगली कवायद है उन श्रोताओं से पूछना कि **आपको कैसे पता है ?** –यह सवाल करने पर आपको पता चल जाता है कि वो अन्य स्रोत या लोग कितने विश्वसनीय हैं। अगर वो भारत को पत्रकारों के लिए सबसे खतरनाक देश सिर्फ इसलिए बता रहे हैं क्यूंकि उन्होंने **'किसी चर्चा में सुना है'** या **'हाल ही में जानी-मानी पत्रकार की हत्या कर दी गई।'** तो इसका अर्थ है कि वो बस कयास लगा रहे हैं और उनके पास सही जानकारी नहीं है। मतलब ये हुआ कि आपको अभी भी सही आंकड़े तलाशने की जरूरत है। (क्रमश:)

# भारतीय सिनेमा के विस्मृत पिता – हीरालाल सेन

**वीरेन दास शर्मा**
फिल्म इतिहासकार तथा सत्यजीत राय फिल्म एण्ड टेलीविजन इंस्टीच्यूट (कोलकाता) में फिल्म का इतिहास पढ़ाते हैं।

भारत में पहली फीचर फिल्म 1913 में नहीं बल्कि उससे 10 साल पहले यानि 1903 में बनी थी जो हीरालाल सेन ने बनायी थी। जी हाँ जी.डी. फालके नहीं बल्कि हीरालाल सेन को ही पहली फीचर फिल्म निर्माण का श्रेय जाताहै। यह सर्वविदित है कि इतिहास को भुलाया नहीं जा सकता है और इस पर समय-समय पर शोध होना चाहिए ताकि सच्चाई सबके सामने आ सके और वह भी तब जब यह साल हीरालाल सेन का 150वीं जयंती वर्ष है।

**1905 (कोलकाला) स्वदेशी मुवमेन्ट फिल्म शॉट – हीरालाल सेन द्वारा**

सवाल उठता है आखिर कौन थे हीरालाल सेन ?

श्री सेन पहले बंगाली उद्यमी थे या यूं कहें कि पहले भारतीय थे जिन्होंने सन् 1998 में बंगाल में फिल्म प्रदर्शनी और निर्माण का कार्य आरम्भ किया था। श्री सेन ने एक पेशेवर फोटोग्राफर के रूप में अपनी जिन्दगी की शुरूआत की एवं बाद में वे उस समय वायस्कोप उद्यमी के रूप में सामने आये जब लोग सिनेमा को ज्यादा महत्व न देते हुए उसे सिर्फ एक वैज्ञानिक आविष्कार के रूप में देखते थे। सन् 1898 में कलकत्ता में पहली बार पर्दे पर चलती-फिरती तस्वीर को देखने के बाद उन्हें भविष्य में इस क्षेत्र में अच्छी सम्भावनाएं दिखाई दीं।

युवा हीरालाल को फोटोग्राफी का बहुत शौक था। सन् 1877 में उन्होंने फोटोग्राफी प्रतियोगिता में स्वर्ण पदक भी जीता था। यह फोटोग्राफी प्रतियोगिता कलकत्ता के प्रसिद्ध बोर्न एण्ड शेफर्ड स्टूडियों में आयोजित की थी। सिर्फ इतना ही नहीं श्री सेनं ने 1898 में औद्योगिक और कला प्रदर्शनी में भी स्वर्ण पदक जीता था। उसी साल उन्होंने अपने लोकप्रिय फोटोग्राफी स्टुडियों जो हीरालाल सेन एण्ड ब्रदर्श के रूप में जाना जाता था, को अलविदा कर वायसकॉपी बिजनेस में रम गये। सन् 1897-98 में कोलकाता में ट्रैवलिंग ब्रिटिश एण्ड अमेरिकन द्वारा प्रस्तुत किये गये वायसकोप से सेन बहुत प्रभावित हुए। सिर्फ इतना ही नहीं श्री सेन सेन्टजेवियर्स कॉलेज के फादर ई.जे. लेफान्ट के पापुलर साइंस पर नियमित रूप से दिये गये सार्वजनिक वार्ताओं से अभिभूत होकर एक बायस्कोप मशीन और फिल्मों को लेने का निर्णय कर लिया। सन् 1898 में श्री सेन

ने ट्रैवलिंग शोमैं के रूप में अपने नये कैरियर की शुरूआत की।

सन् 1898 में थियेटर जगत की हस्ती श्री अमरेन्द्रनाथ दत्त ने हीरालाल सेन को उसकी फिल्मों को लोकप्रिय थियेटर में प्रदर्शित करने के लिए आमंत्रित किया। शीघ्र ही श्री सेन ने पापुलर क्लासिक थियेटर से चुने हुए दृश्यों को सूट करना शुरू कर दिया।

श्री सेन की कम्पनी दी रॉयल बायस्कोप ने समाज के उच्च वर्ग का ध्यान उस समय अपनी ओर आकृष्ट किया जब उन्होंने प्रसिद्ध डलहौसी इंस्ट्यूट किराये पर लिया और 20वीं सदी के मोड़ पर कई शो आयोजित किये। ब्रिटिश अधिकारियों ने शो की प्रशंसा करने के साथ ही साथ पिक्चरों की गुणवत्ता की भी तारीफ की। सेन की महत्वपूर्ण उपलब्धियों में सन् 1903 में प्रस्तुत किया गया शो (अलीबाबा) रहा जिसे उन्होंने नये आयात किये गये कैमरों के जरिए पेश किया था. इसे ही भारतीय सिनेमा की प्रथम फीचर्स फिल्म होने का दावा किया गया है। ज्ञात हो कि 1913 में दादा साहब फाल्कर द्वारा प्रस्तुत फिल्म राजा हरिश्चन्द्र को भारत की पहली फीचर फिल्म बताया गया है। जबकि 1903 में श्री सेन द्वारा बनायी गई फिल्म अली बाबा को किसी भी भारतीय द्वारा पहली स्वदेशी फिल्म के रूप में स्वीकृति प्रदान की जानी चाहिए।

विदेश से कैमरा लेने के बाद श्री हीरालाल सेन ने की घटनों को अपने कैमरे में कैद किया जिसमें 1903 का प्रसिद्ध कोरोनेशन, 1905 के विभाजन के विरुद्ध आन्दोलन और 1911 का दिल्ली दरबार का दृश्य शामिल है। सिटी आफ कोलकाता के अलावा विभिन्न समारोह के दृश्यों को भी श्री सेन ने कैमरे में बंद किया। श्री सेन ने कुल 40 फिल्मे बनाई जिसमें थियेटर दृश्य, फीचर्स फिल्म और विज्ञापन से संबंधित फिल्मे शामिल हैं। लेकिन दुर्भाग्य है कि 1913 में एक भयावह अग्निकांड में उनकी सारी चीजें जलकर राख हो गयीं। श्री सेन को बड़ा आघात लगा कि वे इस सदमें से उबर नहीं पाए। सन् 1917 में श्री सेन का देहान्त हो गया। श्री सेन का टूटा हुआ कैमरा व उनकी कुछ यादें अरोरा फिल्म कारपोरेशन के कलकत्ता स्थित कार्यालय में उपलब्ध है।

बहरहाल 150 साल बाद भी श्री हीरालाल सेन गुमनामी के घेरे से बाहर नहीं निकल पाये। बंगाली सिनेमा व भारतीय सिनेमा में उनके अवदान को भुलाया नहीं जा सकता। यह बात जरूर है कि उनके रिकार्ड व अधिकृत दस्तावेजों के उपलब्ध न होने के कारण बहुत से विवाद कायम हैं जैसे जन्म तिथि व फिल्मों के निर्माण के तारीख आदि आदि। हीरालाल सेन पर गहन अनुसंधान एवं भारतीय सिनेमा के इतिहास में उचित स्थान प्रदान कर उन्हें हम सर्वश्रेष्ठ श्रद्धांजलि अर्पित कर सकते हैं।

परिवार के किसी भी सदस्य की
आस्वाभाविक हरकत को गंभीरता से लें
अच्छे मानसिक स्वास्थ्य या कोई भी बुरी आदत छुड़ाने के लिए
सदीनामा ने की है पहल
(अपनी सदस्यता संख्या बताते हुए सम्पर्क करें)

Mobile
9051525679

E-Mail
sadinama2000@gmail.com

सदस्यता के लिए
9231845289

# हम हैं बीमार, बहुत ही बीमार

किसी समय चोरी छिपे बांटे जाते थे हैंड बिल, अब खुलेआम बंटते हैं हैंडबिल, बड़े अखबारों में छपते विज्ञापन देखें। इन चित्रों को देखकर खबर बनाएं। पूरी कौम महसूस करने लगे, हम हैं बीमार, बहुत ही बीमार। आप इन विज्ञापनों को देखें और हमें पत्र लिखें कि आप अगर खबर बनाते तो कैसे बनाते

आप बनाएं खबर आपके आस पास आपको बीमार साबित करने के तमाम विज्ञापन छप रहे हैं। इन पर स्वास्थ्य सेवाएँ नियंत्रित करने वाली किसी भी संस्था की नजर नहीं है, क्या आप भी सहमत हैं–

**सम्पादक**

# भूत पालने का दोष लगाकर परिवार का किया हुक्का पानी बंद

आधुनिक तकनीक व वैज्ञानिक के इस युग में आम लोगों के मन-मस्तिष्क में भूत-प्रेत का विश्वास या अंधविश्वास बना हुआ है। भूत प्रेत का नाम सुनते ही लोगों के दिमाग में एक अनजाना डर पैदा हो जाता है। शिक्षित से लेकर अनपढ़ हर वर्ग के लोगों को भूत-प्रेत की बातें, आपबीती या कहानियाँ सुनते सुनाते हुए देखा जाता है। भूतप्रेत का आस्तित्व आज भी रहस्य बना हुआ है। इसलए भूतप्रेत से जुड़ी बातें या कहानियाँ हमें रोमांचित करती है। किन्तु प्रश्न है, क्या भूतप्रेत सचमुच में होते हैं?

आइए आज आपको भूतप्रेत की एक सत्य घटना सुनाता हूँ। जिसमें एक गाँव में पंचायत बुलाकर एक परिवार के लोगों को भूत पालने का सिर्फ दोष ही नहीं लगाया गया, बल्कि परिवार को समाज से बहिष्कृत कर उसका हुक्का पानी बंद कर दिया गया। भूत पालने के नाम पर समाज से बहिष्कृत परिवार के सदस्यों को जान से मारने की भी धमकी दी जाने लगी। घटना पश्चिम बंगाल के पश्चिम मिदनापुर जिले के शालबनी थानांतर्गत भीमशोल गाँव की है।

आदिवासी प्रभावित भीमशोल गाँव में किसान मानिक महतो अपने छोटे से परिवार के साथ रहता है। वह खेती बारी के सहारे अपने घर का खर्च उठाया करता है। मानिक का बेटा रमेश महतो कक्षा 10वीं तक ही पढ़ा है। घर की तंग आर्थिक स्थिति के कारण रमेश आगे पढ़ नहीं पाया। पढ़ाई बीच में रुक जाने से रमेश ने अपने पिता के साथ खेतीबारी में हाथ बंटा दिया। अच्छी फसल कैसे पैदा की जाय ? इसके लिए उसने वैज्ञानिक खेतीबारी से जुड़ी कई किताबें पढ़ी। जमीन में धान समेत अन्य फसलों की खेती की। वैज्ञानिक उपायों से खेती करने के कारण उसकी जमीन बेहतरीन फसलों से फूल की तरह खिल्‌ टी। उसे देख महतो के परिवार में खुशियाँ झुमने लगी।

किन्तु महतो की जमीन में अच्छी फसल देखकर गाँव के कुछ लोग ईर्ष्या करने लगे। लोग आपस में बुद्‌बुदाने लगे, "गाँव में ऐसी फसल तो पहले कभी नहीं देखी गयी। आखिर इसके पीछे कोई चमत्कार या भूतप्रेत का हाथ तो नहीं है? महतो ने अपने घर में कोई भूत पाल तो नहीं रखा है?"

महतो के घर में पालतु भूत का पता लगाने के लिए भीमशोल गाँव के लोगों ने एक सालिशी सभा बुलाई। आदिवासी गाँव में पंचायत को सालिसी कही जाती है। सभा में एक जानगुरु को भी बुलाया गया। आदिवासी समाज में ओझा या तांत्रिक को जानगुरु कहा जाता है। जानगुरु ने तंत्र-मंत्र कर कहा, "मुझे तो मानिक महतो की जमीन में हुई भारी खेती के पीछे कोई चमत्कार या भूत का हाथ दिख रहा है। महतो के घर में कोई पालतू भूत है। उसी भूत की मदद से महतो ने यह खेती की।"

जानगुरु की बातों का विरोध करते हुए मानिक का लड़का रमेश ने कहा, "मैंने वैज्ञानिक उपायों से अपनी जमीन में खेती करने के लिए कई किताबें पढ़ीं। किताबों में बताए गये उपायों के अनुसार जमीन में खेती की। इसके बाद यह बेहतरीन फसल हुई है। ज्यादा फसल होने के पीछे कोई भूतप्रेत या चमत्कार का हाथ नहीं है।"

इस पर जानगुरु ने कहा, "किन्तु मुझे तो यह लग रहा है कि गाँव एक के बाद एक मवेशियों की हो रही मौत के पीछे भी कहीं तुम्हारे घर में पालतू भूत का हाथ तो नहीं है?"

जानगुरु के इस प्रश्न से मानिक के परिवार की मुश्किलें और भी बढ़ने लगी। जानगुरु की बातों को गाँव के लोग ज्यादा महत्व देने लगे। गाँव वाले कहने लगे, "मानिक के घर में जरूर कोई भूत का वास है। उस भूत की मदद से मानिक ने अपनी जमीन में इतनी अधिक फसल की खेती की है। मानकि के घर का पालतू भूत ने ही अपनी भूख मिटाने के लि गाँव में एक के बाद एक मवेशियों की जान ली है।"

मानिक ने गाँव वालों को लाख समझाने की कोशिश की, "मेरे घर में कोई भूतप्रेत नहीं है। उन्हें वेवजह परेशान किया जा रहा है।"

गाँव वालों ने आपस में फिर बैठकर यह तय किया, "मानिक के घर में वाकई में भूत है की नहीं इस बात की फिर से जाँच किसी

अन्य जानगुरु से करवानी पड़ेगी।"

इसके बाद मानिक और उसके बेटे रमेश और भीमशोल गाँव का हर परिवार से एक-एक सदस्य एक गाड़ी से ओड़िसा के मयूरभंज जिले के रायरांगपुर थानांतर्गत पाटीपुर गाँव में विधातासम नामक एक जानगुरू के पास गये। जानगुरु ने भीमशोल गाँव से आये हर एक सदस्य की ह्थेली पर दो-दो बूंद सरसों का तेल देकर मुंट्ठी बन्द कर दिया। कुछ देर तक तंत्र-मंत्र पढ़ने के बाद जानगुरु ने एक-एक व्यक्ति की मुट्ठी खोलकर ह्थेली को देखना शुरू किया।

अचानक रमेश की ह्थेली को देखकर जानगुरु ने कहा, "गाँव वालों यह देखों रमेश की ह्थेली पर सरसों के तेल में बाल का एक टुकड़ा है! रमेश के घर में ही भूत है। पालतू भूत के सहारे ही रमेश ने अपनी खेत में खेती कर अच्छी फसल उगायी है। यह भूत मानिक को लाभ पहुँचाया है। किन्तु चिन्ता की बात यह है कि इस भूत के हाथों भीमशोल गाँव का भारी नुकसान होने की आशंका है। भूत को जितना जल्द हो सके महतो के घर, गाँव से खदेड़ देने में ही गाँववालों के लिए भलाई होगी।"

जानगुरु ने गाँव वालों को यह भी चेतावनी दी, "जब तक मानिक अपने घर से भूत को भीमशोल गाँव से बाहर नहीं निकाल फेंकता है तब तक मानिक और उसके पूरे परिवार को समाज से बहिष्कृत कर दिया जाए।"

मानिक के घर में भूत है, इसे साबित करने के बदले में भीमशोल से आये लोगो से मोटी रकम भी जानगुरु ने ली।

ओडिसा में भीमशोल गाँव में लौटने के बाद लोगों ने फिर सालिशी सभा (पंचायत) बुलाई। जिसमें मानिक और उसके पूरे परिवार पर भूत पालने का आरोप लगाया गया। इसके बाद पंचायत ने यह फरमान जारी किया, "जब तक मानिक अपने घर से भूत को गाँव से खदेड़ नहीं देता है तब तक मानिक महतो का पूरा परिवार समाज से बहिष्कृत रहेगा और उसका हुक्का पानी भी इस दौरान बंद रहेगा। इतना ही नहीं गाँव का कोई भी आदमी मानिक के घर के पास से नहीं गुजरेगा। उसकी जमीन में खेती करने कोई नहीं जाएगा। यदि किसी ने भी पंचायत के फरमान का उल्लंघन करने की कोशिश की तो उसका भी ह्श्र मानिक महतो जैसा होगा।"

पंचायत के इस फरमान के बाद समाज से बहिष्कृत मानिक और उसके परिवार को गाँव में जीना मानो मुश्किल सी हो गई। गाँव के खुद को मुखिया जाहिर करने वाले मस्तान किस्म के लोगों ने भी मानिक को जान से मारने की धमकी भी देने लगे।

अपने परिवार की सुरक्षा के लिए मानिक ने पुलिस व प्रशासन से मदद की गुहार लगायी। इस पर पुलिस ने गाँव वालों को सचेत भी किया। पुलिस व प्रसासन के हस्तक्षेप के बाद भी महतो परिवार की मुश्किले और भी बढ़ गयी।

अन्तत: भूत पालने के अपवाद से मुक्ति दिलवाने के लिए मानिक महतो ने भारतीय विज्ञान व युक्तिवादी समिति (साइंस एंड रेशनालिस्ट एसोसिएशन ऑफ इंडिया) से लिखित रूप से आवेदन किया।

ऊपर लिखी बातों का जिक्र करते हु युक्तिवादी समिति के अध्यक्ष प्रवीर घोष ने मुझसे मोबाइल फोन पर कहा, "आप और सुमन दोनों युक्तिवादी कार्यकर्ता हो। आपको भीमशोल गाँव का दौरा करना पड़ेगा। मानिक महतो के परिवार को भूत पालने के आरोप से मुक्ति देना पड़ेगा। इसके लिए गाँव की अंधविश्वास विरोधी कार्यक्रम 'अलौकिक नहीं, लौकिक' आयोजित करना होगा। इस काम में युक्तिवादी समिति के पश्चिम मिदनापुर जिला कार्यकर्ता भी आपको मदद करेंगे।"

प्रबीर जी के सुझाव मुताबिक मैंने सुमन को साथ में लेकर भीमशोल गाँव जाने की तैयारी शुरू कर दी। इस बीच विभिन्न प्रिंट और इलेक्ट्रानिक मीडिया में यह खबर प्रचार की जाने लगी कि युक्तिवादी समिति के कार्यकर्ता मानिक महतो से मुलाकात करने के लिए भीमशोल गाँव में आ रहे हैं।

मैं और सुमन कोलकाता से ट्रेन से मिदनापुर शहर पहुँचे। जहाँ समिति के कार्यकर्ता अनिंद्य सुंदर मंडल के पेइंग गेस्ट हाउस पर पहुँचे। भीमशोल गाँव में जाने से पहले हमने एक बैठक की।

दूसरे दिन सुब भीमशोल गाँव के लिए रवाना होने से पहले गेस्ट हाउस में नास्ता करने हम सब बैठे थे कि गेस्ट हाउस की मालकिन

ने कहा, "सुना हूँआप सब भीमशोल गाँव जाने वाले हो ? आप लोग मेरे बेटे जैसे हो। मेरी बात मानो, भीमशोल गाँव मत जाओ, वहाँ बहुत ही खतरा है। अगर आप में से किसी को कुछ हो गया तो आपके माँ-बाप को भारी दुख होगा।"

मैंने कहा, "आंटी आप को ज्यादा चिन्ता करने की बात नहीं है। हम सुरक्षित लौट आएंगे। हमें भीमशोल गाँव में भेजने वाले हैं प्रबीर घोष जी, वे ही हम सबको लेकर ज्यादा चिंतित हैं। अत: ज्यादा चिंता नहीं करें माँ जी।"

मैं, सुमन, अनिंद्य समेत कुल 8 दोस्त मिदनापुर शहर से एक बस से भीमशोल गाँवके लिए रवाना हो गये। लगभग 3 घंटे बाद हम शालबनी थाना इलाके के 7 नंबर सातपाटी ग्राम पंचायत पर पहुँचे। जहाँ हमने पंचायत की प्रधान आरती बास्के और उप-प्रधान परिमल धर से मुलाकात की और उन्हें कहा, "हम भीमशोल गाँव में भूत पालने के आरोप में समाज से छह: महीने से वहिष्कृत मानिक महतो के घर पर जा रहे हैं। साथ ही हम गाँव में अंधविश्वास के खिलाफ गाँववालों को जागरुक करने के लिए 'अलौकिक नहीं, लौकिक' कार्यक्रम भी करने वाले हैं। आप से अनुरोध है कि आप हमें गाँव में जाने की व्यवस्था कर दें। साथ ही आप पंचायत प्रधान व उप-प्रधान भी हमारे कार्यक्रम में उपस्थित रहें।"

हमारी बातें मानते हुए पंचायत प्रधान ने हमें भीमशोल गाँव में ले जाने के लिए एक छोटी मारुती गाड़ी और कार्यक्रम के लिए लाउडस्पीकर समेत साउंड सिस्टम की व्यवस्था कर दी।

युक्तिवादी कार्यकर्ता भीमशोल गाँव के मानिक महतो के परिवार पर लगे भूत पालने के आरोप की समस्या का समाधान करने जा रहे हैं। यह न्यूज कवरेज करने के लिए कई प्रिंट और इलेक्ट्रानिक मीडिया के कई पत्रकार भी हमारे साथ अन्य वाहनों से भीमशोल गाँव के लिए रवाना हुए।

हमारी गाड़ी भीमशोल गाँव में पहुँची। गाड़ी मानिक महतो के घर से तकरीबन 2 सौ मीटर दूरी पर थी कि अनिंद्य ने अचानक चालक से कहा, "गाड़ी रोको।"

मैंने पूछा, "क्या हुआ ? गाड़ी क्यों रोक दी ?"

अनिंद्य ने कहा, "हम मानिक महतो के घर पर नहीं जा सकते हैं। क्योंकि भूत पालने के आरोप में गाँववालों ने महतो परिवार को समाज से करीब छह महीने से वहिष्कृत कर रखा है। ऐसे में मानिक के घर जाना उचित नहीं होगा। यदि गये तो बड़ी मुश्किल पैदा होने की आशंका है।"

मैंने कहा, "देखो हम कोलकाता से भीमशोल गाँव में इसलिए आये हैं कि मानिक महतो परिवार को दुबारा समाज में सम्मान के साथ जगह मिल जाए। इसके लिए हमें महतो परिवार से सबसे पहले मुलाकात करना होगा। साथ ही महतो के घर के सामने ही 'अलौकिक नहीं, लौकिक' कार्यक्रम करेंगे।"

अनिंद्य ने कहा, "नहीं ! मैं महतो के घर पर नहीं जाऊँगा। उसके घर के सामने कार्यक्रम किया गया तो गाँव एक भी आदमी उसे देखने नहीं आयेगा। क्योंकि भूत के डर से कोई भी आदमी महतो के घर के सामने से गुजरने में भी डरता है। ऐसी स्थिति में हमें इसी जगह पर कार्यक्रम कर हमें लौट जाना ही बेहतर होगा।"

मैंने कहा, "ठीक है। तुम यहींन रहो। मैं और सुमन मानिक के परिवार से मुलाकात करने जाता हूँ। परिवार से मुलाकात कर उनके घर के सामने ही कार्यक्रम करूंगा। हम कोलकाता से इतने दूर इसलिए आए हैं कि ताकि मानिक महतो के परिवार पर भूत पालने का जो आरोप लगाकर उसे समाज से बहिष्कृत किया गया है उसे समाधान कर सकूं। यदि हमने महतो परिवार से मुलाकात नहीं की तो समस्या जस की तस बनी रहेगी। हमारा भीमशोल गाँव में आने का उद्देश्य विफल हो जाएगा। सबसे बड़ी बात यह है कि प्रवीर जी ने हमें भुताह समस्या का समाधान करने के लिए यहाँ भेजा है।"

अंतत: मेरी बात मानकर अनिंद्य मेरे साथ मानिक के घर पर चलने को तैयार हो गया।

हम सब मानिक के घर पर पहुँचे। देखा, मिट्टी से बने हुए कई घर एक दूसरे के साथ जुड़ा हुआ है। दोपहर को महतो परिवार के सदस्य खाना खाने बैठे थे।

हमें घर में आते देख मानिक महतो थाली छोड़कर हमारे सामने उपस्थित हुए। उन्होंने कहा, "आज करीब छह: महीने बाद कोई हमारे

घर पर आया है। यह देख हमें जो खुशी हो रही है वह बयां नहीं कर सकता हूँ।"

मैंने कहा, आपका बेटा रमेश कहाँ है?"

घर के एक कमरे से बाहर निकलते हुए एक युवक ने कहा, "मैं हूँ रमेश।"

रमेश से हाथ मिलाते हुए मैंने कहा, "हम युक्तिवादी समिति के कार्यकर्ता हैं। मैं और सुमन कोलकाता से आये हैं। अनिंद्य मिदनापुर शहर का रहने वाला है। हम सब आपके घर के सामने 'अलौकिक नहीं लौकिक' कार्यक्रम करने वाले हैं। इसके लिए आपकी मदद की थोड़ी जरूरत है?"

"क्यों नहीं।" यह कहते हुए रमेश ने हमें एक कमरे में ले गया। जहाँ हमने कार्यक्रम के लिए लाये सामग्री रखा। घर से एक टेबल और 2 कुर्सी लाकर घर के सामने रखा। युक्तिवादी समिति और ह्यूमैनिस्ट एसोसिएशन के दो बैनर भी बास के झाड़ी में लटका दिये गये। कुछ ही देर में एक अस्थायी कार्यक्रम मंच बनकर तैयार हो गया।

हमने लाउडस्पीकर पर आवाज लगाई, "हम युक्तिवादी समिति के कार्यकर्ता हैं। कोलकाता से आये हैं। आप गाँव वालों के सामने एक कार्यक्रम पेश करने वाले हैं। आप आएं और कार्यक्रम देंखे।"

गाँवके बच्चे से लेकर बुजुर्ग हमारे कार्यक्रम मंच के सामने इकट्ठे होने लगे।

सुमन ने टेबल पर एक मिट्टी से बनी एक कटोरी में थोड़ी सी सूखी लकड़ी रखी। एक बोतल से पानी जैसा तरल एक चम्मच से लाकर उसे कटरी में रखी सूखी लकड़ी पर बूंदबूंद गिराते हुए सुमन ने ओंम हिंग हिंग क्रिंग मंत्र पढ़ना शुरू किया। कुछ ही पल में कटोरी से धुआँ निकलने लगा और अचानक उसमें आग जल उठी। यह देख उपस्थित दर्शक आश्चर्यचकित हो गये।

अब एक खाली सूप और एक गमछा लेकर मंच पर पहुँचे अनिंद्य ने दर्शकों से बोला, "क्या आप में से 2 लोग मुझे थोड़ी मदद कर सकते हैं?"

भीड़ में से दो लोग सामने आये। उनके हाथों में गमछा देकर अनिंद्य ने कहा, "आप दोनों गमछा का दोनों किनारा पकड़ें।"

सामने आये 2 लोगों के हाथों में गमछा थमा कर अनिंद्य ने कागज के एक ठोंगे से एक मुट्ठी चावल लेकर पूछा, "चावल से मुड़ी या लावा बनाने के लिए क्या-क्या लगता है?"

दर्शकों ने बताया, "कड़ाई या हाड़ी, आग और बालू।"

एक मुट्ठी चावल सूप पर फैलाकर अनिद्य ने सूप को गमछा से ऊपर हिलाते हुए मंत्र पढ़ना शुरू किया।

देखते ही देखते सूप मूड़ी से भर गया। यह देख दर्शक आश्चर्यचकित हो गये पूछने लगे, "ये कैसे हुआ?" क्या चमत्कार या जादू से चावल मुडी बन गया?

कार्यक्रम के बीच में एक पत्रकार मेरे पास आये और कानों में कहा, "आपको एक जरूरी जानकारी देनी है।"

मैंने कहा, "कहिए क्या बात है?"

पत्रकार ने मेरे कानों में कहा, "आप युक्तिवादी भीमशोल गाँव में कार्यक्रम कर रहे हैं। यह खबर गाँव के मस्तानों के कानों तक पहुँच गयी है। वे लोग किसी भी समय आप पर हमले कर सकते हैं।"

मैंने धीमी आवाज में पूछा, "आखिर क्यों?"

पत्रकार ने बताया, "गाँव के की मस्तानों ने ही एक साजिश रचकर मानिक महतो के परिवार पर भूत पालने का आरोप लगाया है। महतो परिवार को समाज से वहिष्कृत कर रखा है। ये मस्तान चाहते हैं कि गाँव के लोग भूत पालने के आरोप में मानिक महतो के परिवार की हत्या कर दे। इसके बाद वे महतो के घर-जमीन पर कब्जा कर लेंगे। ये लोग नहीं चाहते हैं कि आप गाँव वालों की आँखें खोल दे कि भूतप्रेत कुछ भी नहीं होता है।

इसलिए कार्यक्रम को बंद कर देने के लिए मस्तान के लोग आप सभी पर हमले कर सकते हैं। यदि आप कहेंगे तो मैं पुलिस को खबर दे सकता हूँ। हम पत्रकारों ने पहले से ही यह खबर स्थानीय पिडकॉटा थाने को सूचना दे रखी है कि युक्तिवादी कार्यकर्ता भीमशोल गाँव में जाने वाले हैं। इसलिए सुरक्षा के लि गाँव में पुलिस बल भेजा जाए। आप कहेंगे तो पुलिस गाँव में आ जाएगी। पुलिस

बल तैयार हैं।"

मैंने पत्रकार से कहा, "आप पुलिस को गाँव में आने के लिए सूचना दे दें।"

पिडकॉटा पुलिस चौकी से आईसी अभिजीत विश्वास के नेतृत्व में भारी पुलिस बल हमारे कार्यक्रम मंच के सामने पहुँचा। कुछ ही देर में पंचायत प्रधान आरती बास्के और उप-प्रधान परिमल धर भी हमारे कार्यक्रम के मंच पर पहुँचे।

अब मंच पर काँच का एक गिलास, एक बरतन में पानी और थोड़ा आटा रखा गया। पानी से आटा गोंदा गया और उसके छोटी-छोटी कई गोलियाँ बनाकर एक पत्तल में रखी गयी।

दर्शकों की भीड़ में खड़े रमेश महतो को पास बुलाकर सुमन व अनिंद्य के साथ एक कतार में खड़ा कर मैंने दर्शकों से कहा, "आपने देखा होगा कि गाँव में किसी घर में भूतप्रेत का पता लगाने के लिए जानगुरु दो-चार कारनाम कर दिखाते हैं। आज मैं भी ऐसा ही कर दिखाने वाला हूँ।"

गिलास पानी से भरा गया। पत्तल में आटे की एक गोली हाथ में लेकर मैंने कहा, "गोली में मंत्र पढ़ा हुआ है। मैं कतार में खड़े एक के बाद एक युवक का नाम लूंगा और उसके नाम पर गोली गिलास के पानी में डालूंगा। यदि जिसके नाम पर गोली पानी में नहीं डूबी तो यह साबित होगा कि उसके घर में भूत बसा हुआ है।"

मैंने एक गोली हाथ में लिया। उसमें दो फूँक मारी और फिर इसे गिलास में डाल दिया। गोली पानी में डूब गयी। इसके बाद सुमन के नाम पर गोली लेकर डाली तो वह भी पानी में डूब गयी। अबकी बार एक गोली अनिंद्य के नाम पर गिलास में डाला तो वह पानी में डूबी और फिर ऊपर आकर पानी में तैरने लगी। यह देख दर्शक आश्चर्य में पड़ गये।

मैंने कारनामें को फिर दोहराया। फिर देखा गया कि अनिंद्य के नाम पर आँटे की गोली गिलास में डूबने के बजाय पानी पर तैर रही है। मैंने कहा– "यानी अनिंद्य के घर में भूत बसा हुआ है।"

मैंने अपनी बात पूरी नहीं की कि दर्शकों के भीड़ में एक वयस्क आदमी ने ऊँची आवाज में कहा, "रमेश के घर में भूत है।"

मैंने पूछा, "कौन कहता है रमेश के घर में भूत है?"

मेरे प्रश्न पर कई लोगों ने एक साथ बोलना शुरू कर दिया, "जानगुरु ने तंत्र-मंत्र कर यह साबित कर दिखाया है कि रमेश के घर में भूत है।"

चुनौती देते हुए मैंने कहा, "क्या आप लोग उस जानगुरु को हमारे कार्यक्रम मंच पर हाजिर कर सकते हैं? यदि जानगुरु हमारे सामने दुबारा यह साबित कर दिया कि रमेश के घर में भूत है, तो हम जानगुरु को 25 लाख का इनाम देंगे। युक्तिवादी समिति के महासचिव प्रबीर घोष ने अपनी 'अलौकिक नहीं, लेकिन' नामक पुस्तक में भूत का प्रमाण देने वाले को 25 लाख रुपये के इनाम देने का ऐलान किया है।" अपने दावे के सबूत के तौर पर मैंने दर्शकों को प्रबीर घोष की लिखी हुई पुस्तक भी दिखाई।

इस पर एक बुजुर्ग ने मुझसे पूछा, "क्या आपके पास इतने रुपये हैं?"

मैंने कहा आपके सामने पुलिस और मीडिया उपस्थित है। ऐसी स्थिति में जानगुरु को मंच पर हाजिर कर उसे यह साबित कर दिखाने के लिए कहिए कि किसी के घर में भूत है कि नहीं। यदि जानगुरु ने भूत का प्रमाण दे दिया तो हम उन्हें जरूर रुपये देंगे।"

भीड़ में उपस्थित लोग एक-दूसरे का मुँह देखने लगे।

मैंने आगे कहा, "रमेश के घर में भूत है, इसे बताने के लिए जानगुरु ने जो कारनामा दिखाया था, उसमें सिर्फ और सिर्फ धोखाधड़ी है।"

मैंने आगे बताया, "धार्मिक मान्यता के अनुसार आत्मा का अर्थ चिन्ता, चेतना, चैतन्य या मन होता है। आज आधुनिक विज्ञान ने साबित किया है कि मस्तिष्क की स्नायु कोशिकाओं की क्रिया-प्रतिक्रिया का एंगल ही मन या चिन्ता है। स्नायु कोष के बिना चिन्ता, मन या आत्मा का अस्तित्व असंभव है। शरीर की मौत के साथ ही मस्तिष्क के स्नायु कोशिकाओं का भी अंत हो जाता है। ऐसे में इसकी क्रिया-प्रतिक्रिया भी समाप्त हो जाती है। ऐसे में आत्मा की मौत हो जाती है। यानि शरीर की तरह आत्मा का भी खात्मा होता है। बात रही भूतप्रेत की तो यह बकवास है वास्तव में अतृप्त

आत्माओं या भूतप्रेत का वजूद ही नहीं होता है और यह अंधविश्वास मात्र है। किन्तु जानगुरु जैसे पाखंड अपनी उल्लू सीधा करने के लिए भूतप्रेत के नाम का डर दिखाकर अंधविश्वास में डूबे लोगों को लूटते हैं। किसी के घर में भूत होने का झूठा आरोप लगाते हैं। जिस तरह से मानिक महतो के घर में भूत होने का आरोप लगाया गया है। यह आरोप सरासर बेबुनियाद है।"

इतना सुनने के बाद गाँव वाले कहने लगे, "आपने मंच पर जो भी कारनामा दिखाया, इसकी पीछे तंत्र-मंत्र नहीं है?"

मैंने कहा, "हम कोई जादूगर या चमत्कारी बाबा-तांत्रिक नहीं हैं। हमारे पास जादू की छड़ी नहीं है। हमने तो सिर्फ लौकिक तरकीब से कारनामा दिखाया है।"

दर्शकों ने पूछा, "बिना माचिस के मिट्टी की कटोरी में रखी लकड़ी में आग कैसे लग गयी? सूप में रखे चावल कैसे मुडी बन गये।?"

इन कारनामों के पीछे लौकिक रहस्यों का खुलासा करते हुए मैंने कहा, "आपने देखा होगा सुमन ने एक चम्मच से पानी जैसा तरल कटोरी में बूंदबूंद कर गिराया था। वह कोई आम तरल नहीं बल्कि ग्लिसरीन था। और कटोरी में पहले से ही लकड़ी के साथ एक रासायनिक पदार्थ पोटेशियम परमैंगनेट रखा हुआ था। पोटेशियम परमैंगनेट में ग्लिसरीन घुलते ही इनमें रासायनिक क्रिया हुआ और कटोरों में आग जल उठी।"

चावल में मुडी कैसे बना, इसका भी खुलासा किया गया।

दर्शक पूछने लगे, "आटे की गोली पानी में कैसे तैरने लगी?"

मैंने कहा, आटे की गोलियों में तंत्रमंत्र की शक्ति नहीं है। पत्तल में रखी हुई गोलियों में से कईयों में पहले से थर्मकोल का छोटा-छोटा टुक्ड़ा भरा हुआ था। ऐसी गोली जब गिलास के पानी में डाली जा रही थी, तब वह पानी में डूबने के बजाय तैरने लगी।"

मैंने आगे कहा, "जानगुरु, तांत्रिक, बाबाजी के पास कोई भी अलौकिक शक्ति नहीं होती है। ये जानगुरु लौकिक तरकीब अपना कर जो भी कारनामा दिखाते हैं उसे देख आम लोग समझने लगते हैं कि जानगुरु के पास अलौकिक शक्ति है।"

युक्तिवादी समिति द्वारा आयोजित 'अलौकिक, नहीं लौकिक" कार्यक्रम देखने के बाद गाँव वाले एक साथ कहने लगे, "जानगुरु ने हम गाँव वालों से छल किया है। भूत के नाम पर हमें डराया-धमकाया गया। क्या जानगुरु के खिलाफ कोई कार्रवाई नहीं की जा सकती है?"

मैंने कहा, जरूर कर्रवाई कर सकते हैं। भारतीय कानून में यह स्पष्ट रूप से कहा गया है कि ताबीज, कवच, ग्रहरत्न, तंत्रमंत्र, झाड़फूंक, चमत्कार, दैवी औषधी आदि द्वारा किसी भी समस्या या बीमारी से छुटकारा दिलवाने का दावा तक करना जुर्म है। तंत्रमंत्र, चमत्कार के नाम पर आम जनता को लुटने वाले ज्योतिषी, ओझा, जानगुरु, तांत्रिक जैसे पाखंडियों को कानून की मदद से जेल की हवा तक खिलाई जा सकती है।"

मैंने बताया, "ड्रग एंड कॉस्मेटिक एक्ट, 1940 के तहत किसी भी रोग से मुक्ति दिलवाने के दान पर दिये जाने वाले ताबीज, कवच, मंत्र युक्त जल आदि को औषध के रूप में स्वीकार्य होगा। बिना लाइसेंस के औषध के निर्माण, बिक्री तथा समवितरण को जुर्म माना जाएगा। ताबीज, कवच इत्यादि द्वारा रोग मुक्ति नहीं होने पर या मरीज की मृत्यु होने पर भारतीय दंड संहिता की धारा एस-320 के तहत दोषी को सजा होगी।"

मैंने बताया, "भारतीय दंड संहिता की धारा 420 के तहत किसी को व्यक्ति को कपटपूर्वक या बेईमानी से उत्प्रेरित कर आर्थिक, शारीरिक, मानसिक, संपत्ति या ख्याति संबंधित क्षति पहुँचाना शामिल है। यह एक दंडनीय अपराध है। इसके तहत 7साल तक के कारावास की सजा का प्रावधान है। बाबा, ओझा, जानगुरु, तांत्रिक सिईंग और सिईंग जालसाज है। ऐसे जालसाज से ठगी का शिकार बने लोग धारा 420 के तहत शिकायत दर्ज करा सकता है।"

मैंने कहा, "आप गाँव वाले जानगुरु के खिलाफ थाने में शिकायत दर्ज कराएँ। युक्तिवादी समिति आपको हर संभव सहयोग करने के लिए तैयार है।"

अन्तत: कार्यक्रम मंच पर उपस्थित पंचायत प्रदान आरती बास्के

और उपप्रधान परिमल धर ने कहा, "युक्तिवादी कार्यकर्ताओं ने भीमशोल के लोगों की आँखों पर भूत का जो अंधविश्वास बना हुआ था, उसे दूर कर दिया। भूत सिर्फ अफवाह है, किन्तु जानगुरु की बातों में आकर गाँव वालों ने बेगुनाह मानिक महतो के परिवार पर जुल्म ढाया। परिवार को समाज से बहिष्कार किया। महतो परिवार के साथ अन्याय हुआ है। इसके लिए हमें दु:ख है। महतो परिवार घर में भूत पालने का जो आरोप लगाया गया था, वह सरासर गलत है। आजसे महतो परिवार पर लगाये गये सभी आरोपों से मुक्त कर दिया जाता है। हम आज इस मंच से यह ऐलान करते हैं कि मानिक महतो का परिवार भीमशोल गाँव में अब से सिर उठाकर जी सकेंगे।"

उन्होंने कहा, "महतो परिवार पर से भूत पालने का आरोप खत्म करने के लिए युक्तिवादी कार्यकर्ताओं ने जो कार्यक्रम किय। इसके लिए हम भीमशोल के निवासियों की ओर से युक्तिवादी समिति का शुक्रिया अदा करते हैं।"

यह सुनकर मंच के सामने उपस्थित भीमशोल के लोग खुशियों से झूमने लगे और तालियाँ बजाने लगे।

मानिक महतो हाथ जोड़कर मेरे सामने आकर कहा, "आप युक्तिवादियों ने मेरे परिवार को बहुत ही बड़ी मुसीबत से मुक्त कराया है। इसके लिए आपको किन शब्दों में धन्यवाद दूं, यह समझ में नहीं आ रहा है। आपने बहुत ही बड़ा उपकार किया है। इसके लिए हम आपके सदैव आभारी रहेंगे।" यह कहते हुए महतो की आँखों में आँसू आ गये।

मैंने मानिक का हाथ थाम कर कहा, "यह तो हमारा कर्तव्य था। आपके परिवार को गाँव में फिर से सम्मानपूर्वकत जगह मिल गयी, यही हमारे लिए खुशी की बात है।"

पास खड़े रमेश ने कहाँ, मुझे अब भी डर लग रहा है क्योंकि जिस बदमाश मस्तान के इशारे पर गाँव वालों ने हमारे परिवार पर भूत पालने का आरोप लगाया था। हमें गाँव से बहिष्कार किया गया था। वह मस्तान अभी यहाँ आया हुआ है। मुझे डर है कि आप युक्तिवादिया। पत्रकारों और पुलिस के गाँव से चले जाने के बाद मस्तान के लोग मेरे परिवार पर जानलेवा हमला कर सकता है। कृपया आप कुछ कीजिए।" यह कहते रमेश ने उस मस्तान को दिखाया।

मैंने भीमशोल गाँव में हमारे कार्यक्रम के दौरान पिडकॉटा पुलिस चौकी से आईसी अभिजीत विश्वास को रमेश की बताई बात कही।

इसके बाद विश्वास ने आवाज लगाकर उस मस्तान को अपने पास बुलाया और उसे जमकर फटकार लगायी। कहा, "तू देखने में सांड़ जैसा दिखता है। सुना हूँ तू गाँव में बड़ा मस्तान बना घुम रहा है। महतो के परिवार पर भूत पालने का आरोप लगवाया है। कोलकाता से आये शिक्षित युवकों ने गाँव में आकर कार्यक्रम कर यह समझाने का प्रयास किया कि भूतप्रेत कुछ भी नहीं होता है। जानगुरु जालसाज होता है। क्या युक्तिवादियों की बातें तेरे दिमाग में नहीं घुसी है? यदि अब भी बात समझ में नहीं आयी होगी तो तुझे हवालात में ले जाकर ऐसी मरम्मत करूंगा कि तुझे समझ में आ जाएगा कि भूत क्या होता है।"

पुलिस की फटकार खाते ही मस्तान ने सिर हिलाते हुए कहा, "सर आपसे वादा करता हूँ कि आगे से भीमशोल गाँव में किसी भी व्यक्ति या परिवार पर भूतप्रेत के नाम पर जुल्म नहीं होगा।"

अंतत: मानिक महतो के परिवार को भूत पालने की सजा से मुक्ति मिल गया। महतो परिवार आज से भीमशोल गाँव के साथ एक हो गया।

सूरज पश्चिम दिशा में ढल चुका था। हम सब भीमशोल गाँव से मिदनापुर शहर के लिए गाड़ी से रवाना हो गए।

कोलकाता लौटने के कई दिनों बाद हमें खबर मिली की हमारे सुझाव पर भीमशोल के गाँव वालों ने ओडिसा के जानगुरु के खिलाफ पिडकॉटा पुलिस चौकी और शालबनी थाने में एफआईआर दायर कराई है।

पुलिस ने आश्वासन दिया, "जानगुरु के भीमशोल गाँव में पैर पड़ते ही उसे पुलिस गिरफ्तार कर लेगी।"

**–संतोष शर्मा**
गाँव : जाफरपुर, कल्याणी हाई वे
पोस्ट : नोना चन्दनपुकुर, जिला : उत्तर 24 परगना
कोलकाता-122, मो० : 09330451977
E-mail : rationalist.journlist@gmail.com

पृष्ठ 1 का शेषांश

## भीमा कोरेगांव.....

सिपाही अपने दलित अफसरों को सेल्युट करने और उनसे आदेश लेने के लिए तैयार नहीं थे। अंबेडकर का प्रयास यह था कि दलितों की ब्रिटिश सेना में भर्ती जारी रहे और इसी सिलसिले में उन्होंने यह सुझाव दिया कि सेना में अलग से महार रेजिमेंट बनाई जानी चाहिए। महार सिपाहियों के पक्ष में अंबेडकर इसलिए खड़े हुए क्योंकि वे चाहते थे कि समाज के विभिन्न क्षेत्रों में दलितों की मौजूदगी हो।

क्या भीमा कोरेगांव युद्ध दलितों द्वारा पेशवाई को समाप्त करने का प्रयास था? यह सही है कि पेशवाओं का शासन घोर ब्राह्मणवादी था। शूद्रों को अपने गले में एक मटकी लटकाकर चलना पड़ता था और उनकी कमल में एक झाड़ू बंढी रहती थी ताकि वे जिस रास्ते पर चलें, उसे साफ करते जाएं। यह जातिगत भेदभाव और अत्याचार का चरम था। क्या अंग्रेज, बाजीराव के खिलाफ इसलिए लड़ रहे थे क्योंकि पेशवाओं के ब्राह्मणवाद का अंत करना चाहते थे? कतई नहीं। वे तो केवल अपने साम्राज्य की सीमाओं का विस्तार करने के इच्छुक थे ताकि उनका व्यापार और फले-फूले और उन्हें भारत को लूटने के अवसर उपलब्ध हों सकें। इसी तरह, महार सिपाही, पेशवा के खिलाफ इसलिए लड़े क्योंकि वे अपने नियोक्ता अर्थात अंग्रेजों के प्रति वफादार थे। यह सही है कि इसके कुछ समय बाद देश में समाज सुधार की प्रक्रिया शुरू हुई और उसका कारण थी आधुनिक शिक्षा। अंग्रेजों ने देश में आधुनिक शिक्षा व्यवस्था इसलिए लागू की ताकि प्रशासन के निचले पायदानों पर काम करने के लिए लोग उन्हें उपलब्ध हो सकें। समाज सुधार इस प्रक्रिया का अनायास प्रतिफल था। अंग्रेज भारत की सामाजिक व्यवस्था में परिवर्तन लाने के लिए अपनी नीतियां नहीं बनाते थे। वैसे भी, उस दौर में जातिगत शोषण के प्रति उस तरह की सामाजिक जागृति नहीं थी जैसी कि बाद में जोतिबा फूले के प्रयासों से आई।

यह कहना कि पेशवा राष्ट्रवादी थे और दलित, ब्रिटिश सेना में भर्ती होकर साम्राज्यवादी शक्तियों का समर्थन कर रहे थे, बेबुनियाद है। राष्ट्रवाद की अवधारणा ही औपनिवेशिक शासनकाल में उभरी। ब्रिटिश शासन के कारण देश में जो सामाजिक-आर्थिक परिवर्तन आए, उनके चलते दो तरह के राष्ट्रवाद उभरे। पहला था भारतीय राष्ट्रवाद, जो उद्योगपतियों, व्यापारियों, शिक्षित व्यक्तियों, श्रमिकों और पददलित तबके के नए उभरते वर्गों की महत्वाकाक्षाओं की अभिव्यक्ति था। दूसरे प्रकार का राष्ट्रवाद धर्म पर आधारित था - हिन्दू राष्ट्रवाद और मुस्लिम राष्ट्रवाद। इसके प्रणेता थे जमींदार और राजा-नवाब, जो समाज में प्रजातांत्रिक मूल्यों के प्रति बढ़ते आकर्षण से भयातुर थे और धर्म के नाम पर अपना वर्चस्व बनाए रखना चाहते थे।

पिछले कुछ वर्षों में देश में दलितों के बीच असंतोष बढ़ा है। इसके पीछे कई कारण है। रोहित बेम्युला की संस्थागत हत्या और ऊना में दलितों की निर्मम पिटाई इसके लिए कम जिम्मेदार नहीं है। वर्तमान सरकार की नीतियां, दलितों को समाज के हाशिये पर धकेल रही हैं – फिर चाहे वह आर्थिक क्षेत्र हो या शिक्षा का क्षेत्र। कोरेगांव में भारी संख्या में दलितों का इकट्ठा होना इस बात का प्रतीक है कि वर्तमान स्थितियों से वे गहरे तक असंतुष्ट हैं। नए उभरते दलित संगठन समाज के अन्य दमित वर्गों के साथ गठजोड़ कर रहे हैं। भीमा कोरेगांव में हुई घटनों के बाद धार्मिक अल्पसंख्यकों, श्रमिकों और कई अन्य सामाजिक संगठनों ने दलितों के साथ अपनी एकजुटता प्रदर्शित की। दलित, अतीत के नायकों से प्रेरणा ग्रहण करने का प्रयास कर रहे हैं। हालिया घटनाक्रम से यह साफ है कि वे भारतीय प्रजातंत्र में अपना यथोचित स्थान पाने के लिए दृढ़ संकल्पित हैं। उन पर हिन्दू दक्षिणपंथी समूहों का आक्रमण, दलितों की महत्वाकांक्षाओं को दबाने और कुचलने का प्रयास है।

**– राम पुनियानी**

अंग्रेजी से हिन्दी रूपान्तरण अमरीश हरदेनिया


**आप अपनी रचनाएं भेजें**

48/49 -A स्वीस पार्क,

कोलकाता- 700 033

☎ : 9231845289, 2470-4061,

E-mail : jjitanshu@yahoo.com

ISSN : 2454-2121
R.N.I. No. WBHIN/2000/1974
Central Govt. Postal Regn. No. TECH/WB/RNP/SP-003/2014-16

1 से 28 फरवरी, 2018
कुल पेज : 28

मूल्य : 5.00
**सदीनामा**
E-mail : jjitanshu@yahoo.com

## पाठक नामा

सम्पादक महोदय,

आज मेल पर 'सदीनामा' प्राप्त हुआ, आभार अंक महत्वपूर्ण है विशेष रूप से पहली बार काव्यात्मक विधान में सम्पादकीय 'काली बोली ..है' आज की छद्म प्रगतिशीलता पर कटाक्ष है। हम नेपाल के साथ हैं' केवल राजनीतिक-विचारात्मकता के लिए ही नहीं साम्राज्यवादी विस्तार की लिप्सा के विरोध में सशक्त प्रतिरोध है। हल्दीघाटी.. इतिहास के अनछुए पृष्ठों को प्रकट करता है. भाजपा द्वारा नेहरू के बरबक्स पटेल को प्रश्रय देने की मुहिम वोट-बैंक और डिवाइड एंड रूप की विकृति है 'धोखे का धंधा' अच्छी पठनीय कहानी है।

–प्रताप दीक्षित
MHD 2/33, Sector H, Jankipuram
Lucknow-226021, M: 9956398603

सम्पादक महोदय,

सदीनामा का पीडीएफ वर्जन मिला, पढ़कर अच्छा लगा। इसके जरिए आपको और कोलकाता को याद किया। आप अच्छे होंगे। शुभकामनाएं

–अरविन्द चतुर्वेद
लखनऊ
Editor- Daily News Activist
E-mail :arvind.chaturved@gmail.com

**फोन करें**

**182 अगर ट्रेन में खतरा लगे**

**सदीनामा द्वारा जनहित में जारी**

*With best compliments from :*

**GOLDEN**
**Machinex Corporation**

**Regd. Office :** 194/3, G.T. Road (North) Salkia
Howrah-711 106, West Bengal
Ph : 2655-7582, 2655-7835
Fax : (91) (033) 2655-7835/2211-5035

**Showroom :** 7, Ganesh Chandra Avenue
Kolkata- 700013
Ph. : 2237-2835, 2237-8896

**Website :** www. goldenmachinery.com

**E-mail :** mail@goldenmachinery.com

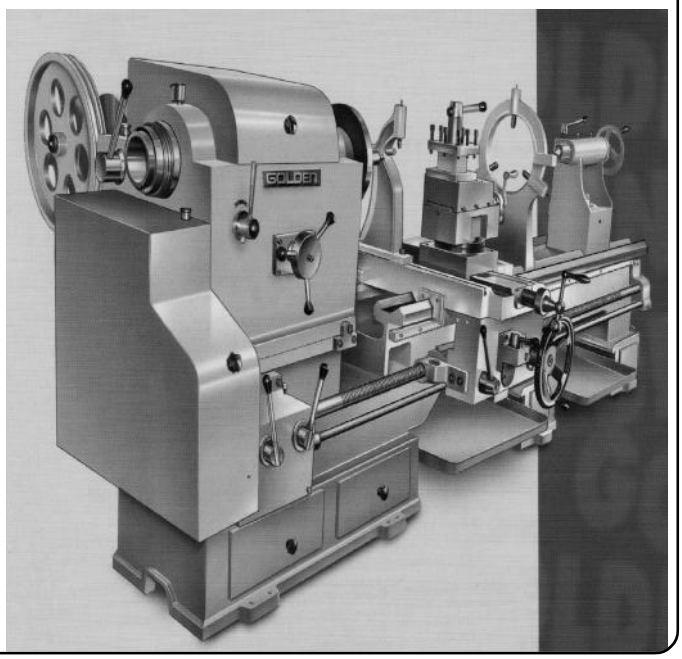


मुद्रक, प्रकाशक एवं स्वत्वाधिकारी सोनिया शर्मा द्वारा डायमंड आर्ट प्रेस, 37 ए, बैंटिक स्ट्रीट, कोलकाता-69 से मुद्रित तथा H-5, Govt. Qtrs. Budge Budge (बजबज), Kolkata-700137, 24 Pgs. (S), W.B. India से प्रकाशित ।
**संपादक : जितेन्द्र जितांशु,** ☎ : 9231845289, E-mail : jjitanshu@yahoo.com, R.N.I. No. WBHIN/2000/1974